चरनदासजी की बानी

दूसरा भाग

जिस में

उन के ग्रंथ के अति मनोहर और हृदयबेधक भजन,
चौपाई, दोहे आदिक, कई प्राचीन हस्त
लिखित पुस्तकों से चुन कर मुख्य २
अंगों और रागों के अनुसार
यथाक्रम रक्खे गये हैं

और

गूढ़ कड़ियों व कड़े या अनूठे शब्दों के अर्थ व
संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं।

PRINTED AND PUBLISHED AT THE
BELVEDERE STEAM PRINTING WORKS, ALLAHABAD,
BY SACHCHIDANANDA.

1908.

सफ़हा १२४]   [दाम ।≤)॥

निवेदन

संत बानी सीरीज़ (पुस्तक माला) के छपने की सूचना पहिले दी जा चुकी है और यह जताया गया है कि इसका अभिप्राय जक्त प्रसिद्ध महात्माओं की बानी वा उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियां हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय से ऐसे हस्त लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहां तक पिछले पांच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मंगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। जहां तक बन पड़ता है सर्व साधारण के उपकारक शब्द चुनकर और कई लिपियों का मुकाबला करके ठीक रीति से शोध कर संग्रह किये जाते हैं, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भांति बेसमझे और जांचे छाप दिये जायं। शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारण की समझ योग्य और ऐसे मनोहर और हृदय बेधक हों जिनसे आंख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

दो बरस से यह पुस्तक माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन चरित्र भी साथ ही छापा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम मात्र नहीं हैं।

॥ अंगों का सूची पत्र ॥

नाम अंग और उसके आधीन विषयों का	पृष्ठ
भेद बानी	१२१-१४४
सावन व हिंडोला झूला ...	१४५-१५१
बसंत व होली	१५१-१५६
सारांश निरूपन	१५६-१६०
गुरु निरूपन	१५७-१५८
नाम निरूपन	१५८-१६०
मिश्रित	१६०-१९१
करनी	१९१-२२६
बचन के कर्म	१९५-१९६
तन के कर्म	१९७ १९८
मन के कर्म	१९८-२००
सुभ असुभ कर्म फल के दृष्टांत ...	२००-२१५
अष्ट सिद्धि के नाम	२२२-२२३
गुरुमुख लच्छन	२२६-२२७
चुने हुए दोहे	२२८-२३६

॥ शब्दों की सूची ॥

शब्द पृष्ठ

अ

अचरज अलख अपार १८७
अब घर पाया हो १७६
अब तू सुमिरन कर मन मेरे १६३
अवधू ऐसी मदिरा पीजे १७१
अवधू सहसदल १२१
अब मैं सतगुरु सरनै आयो १५९
अब हम ज्ञान गुरू से पाया १३९
अरे नर जन्म पदारथ खोया रे १७७
अरे नर हरि का हेत १८९
अरे मन करो ऐसा जाप १६३

आ

आदि हुं आनंद १८१
आरति रमता राम की कीजे १८२

इ

इन नैनन निराकार लहा १८८

ऐ

ऐसी जोग जुक्ति १६८
ऐसा देस दिवाला रे १३२

शब्द				पृष्ठ

क

कछु मन तुम सुधि राखो	...	...	...	१८५
करनी की गति और है	...	...	...	१७०
कर्म करि निष्कर्म होवै	...	...	...	१७९
कोइ जानै संत सुजान	...	...	...	१४१
कोइ दिन जीवै	...	...	...	१८४

ग

गगन मंडल में आरति कीजै	...	...	...	१८३
गुप्त मते की बात हेली	...	...	...	१४३
गुरु गम मगन भया	...	...	...	१२६
गुरु गम यहि बिधि	...	...	...	१६७
गुरु दया जोग यहि विधि	...	...	...	१३६
गुरु दूती बिन	...	...	...	१२१
गुरु बिन कौन डुबावनहार	...	...	...	१४०
गुरु बिन मेरे और न कोय	...	...	...	१६०
गुरु सेती सतगुरु बड़े	...	...	...	१५७
गुरु हमरे प्रेम पियायो हो	...	...	...	१७३

च

चलइ आवै	...	...	...	१९०
चहुं दिस झिलमिल	...	...	..	१४२

छ

छूटे काल जंजाल	...	...	...	१४५

शब्द	पृष्ठ

ज

जग को आवन जान १८६
जग में दो तारन कूं नौका १५६
जब गुरु शब्द नगारे बाजैं १२३
जब सूं मन चंचल घर आया १७८
जब से अनहद घोर सुनी १२८
जिन्हैं हरि भक्ति पियारी हो १७३
जो जन अनहद ध्यान धरै १२८
जो नर हरि धन १६४

झ

झूलत कोइ कोइ संत १६६
झूलत गुरुमुख संत १४४
झूलत हरि जन संत १३५

ट

टुक निर्गुन छैला सूं १३७
टुक रंग महल में आव १३१

त

तरसैं मेरे नैन हेली १५०
तू सुन हे लंगर बौरी १३८
तेरी छिन छिन छीजत आयू १८०

द

दुनिया मगन भये धन धाम १८९

शब्द	पृष्ठ
न	
निरंतर अटल समाधि	१३४
प	
पर आसा है दुखदाई	१६९
परम सखी सोइ साध	१६५
प्रेम नगर के माहिं	१५५
परसिया देस	१२४
पांचन मोहिं लिये बिलमा	१९७
पांच सखी ले लार	१३३
फ	
फिर फिर मूरख जन्म गंवायो	१८४
ब	
ब्रह्म दरियाव नहिं वार पारा	१३०
बिथा मोरी जानत हौ	१६८
भ	
भइ हूं प्रेम में चूर हो	१६४
भाई रे समझ जग व्योहार	१७४
भागो साथिन हे	१४८
म	
माला फेरे कहा भयो	१७१
मेरे सतगुर खेलत	१५१
मो बिरहिन की बात हेली	१५०
मंगल आरत कीजै प्रात	१६१
मंदिर क्यों त्यागै	१८२

शब्द	पृष्ठ
य	
ये सब निज स्वारथ के गरजी	१७४
यों कहैं हरि जू दया निधान	१६२
व	
वह अच्छर कोइ	१२७
वह घर कैसा होय हेली	१३८
वह पुरुषोत्तम मेरा यार	१६२
वह बसंत रे वह बसंत	१५२
स	
सखि सजनी हे	१४६
सखी री तत मत	१५३
सखी री हिलि मिलि	१४०
सतगुर अच्छर मोहिं पढ़ायो	१५८
सब जग पांच तत्व	१२२
सब रस भूल	१३४
समझ रस कोइक पावै हो	१५७
समझि संभारो राम जी	१७७
सहज गति ज्ञान समाधि	१२९
साधो अजब नगर	१३७
सांचा सुमिरन कीजिये	१६७
साधो निंदक मित्र हमारा	१७२
साधो भाई यह जग	१४१
साधो राम भजे ते सुखिया	१७५
साधो समुझौ अलख	१३३
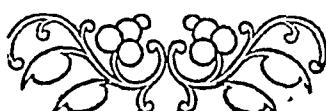
शब्द				पृष्ठ
साधो होनहार की बात	...	...	...	१७२
सुधा रस कैसे पैये हो	...	...	...	१२३
सुन सुरत रंगीली हो	...	...	...	१३१
सो गुरु बिन वह घर	...	...	...	१२५
सो लखि हम निर्गुन	...	...	...	१३४

ह

हम तो आतम पूजा धारी	...	...	...	१८०
हमारे गुरु मारग	...	...	...	१४२
हरि पाये फल देख	...	...	...	१८७
हरि पीव कूं पाइया	...	...	...	१५५
हरि बिन कौन	...	...	...	१८५
हिल मिल होरी खेलि	...	...	...	१५३
हे मन आतम पूजा कीजै	...	...	...	१७६
हो अवगति जो जानै	...	...	...	१३९

चरनदासजी की बानी

दूसरा भाग

भेद बानी

शब्द १

॥ होली राग धनाश्री ॥

गुरु दूती* बिन सखी पीव न देखो जाय ।
भावैं तुम जप तप करि देखो भावैं तीरथ न्हाय ॥१॥
पांच सखी पच्चीस सहेली अति चातुर अधिकाय ।
मोहिं अयानी जानि कै मेरो बालम लियो लुकाय† ॥२॥
बेद पुरान सबै जो ढूंढ़े स्रुति इस्मृति सब धाय ।
आनि धर्म औ क्रिया कर्म में दीन्हो मोहिं भरमाय ॥३॥
भटकत भटकत जन्मै हारी चरन सखी गहे आय ।
सुकदेव साहब किरपा करिकै दीन्हो अलख लखाय ।४।
देखत हीं सब भ्रम भय भागे सिर सूं गई बलाय ।
चरनदास जब प्रीतम पायो दरसन कियो अघाय ।५।

शब्द २

॥ राग केदारा ॥

अवधू सहसदल अब देख ।
सेत रंग जहं पैखरो‡ छबि अग्र डौर बिसेख ॥१॥

---

* बिचौलिया । † छिपाय । ‡ कंवल की पखरी ।

अमृत वर्षा होत अति झरि तेज पुंज प्रकास ।
नाद अनहद बजत अद्भुत महा ब्रह्म विलास ।२।
घंट* किंकिनि* मुरलि* बाजै संख* धुनि मन मान।
ताल* भेरि* मृदंग* बाजत सिंधु गरजन जान ॥३॥
काल की जहं पहुंच नाहीं अमर पदवी पाव ।
जीति आठौ सिद्धि ठाढ़ी गगन मद्धे आव । ॥४॥
करै गुरु परताप करनी जाय पहुंचै सोय ।
चरनदास सुकदेव किरपा जीव ब्रह्मै होय ॥५॥

शब्द ३

॥ राग बिहागरा ॥

सब जग पांच तत्व को उपासी ॥टेक॥
तुरियातीत सबन सूं न्यारा अविनासी निर्वासी ॥१॥
कोई पूजै देवल मूरत सो पृथ्वी तत जानो ॥२॥
कोई न्हावै पूजै तीरथ सो जल को तत मानो ॥३॥
अग्निहोत्र अरु सूरज पूजा सो पावक तत देखा ॥४॥
पवन खैंच कुंभक को राखै वायु तत्त को लेखा ॥५॥
कोई तत्व अकास† को पूजै ता को ब्रह्म बतावै ॥६॥

---

* बाजों के नाम। † चिदाकाश (चैतन्य आकाश) जिस को कोई २ विद्याज्ञानी ब्रह्म मानते हैं।

जो सब के देखन में आवै सो क्यों अलख कहावै ॥७॥
परम तत्व* पांचौ से आगे गुरु सुकदेव बखानैं ॥८॥
चरनदास निस्चै मन आनौ बिरला जन कोइ जानै॥९॥

शब्द ४

॥ राग परज ॥

सुधा रस कैसे पैये हो।
कूप कहां केहि ठौर है कैसे करि लहिये हो ॥१॥
नेजू† कित कित गागरी कित भरने वाली हो।
कैसे खुलै कपाट हीं को ताला ताली हो ॥ २ ॥
कौन समय किस ग्रह बिषै अंचवै किन माहीं हो।
तुमसे‡ जानैं भेद कूं अरु बहुतक नाहीं हो ॥३॥
पीकर किस कारज लगै अरु स्वाद बतावो हो।
फल या का कहि दीजिये सब खोलि जतावो हो ॥४॥
सुकदेव सूं पूछन करै यह चरनहिं दासा हो।
किरपा करिकै कीजिये मेरि पूरन आसा हो ॥५॥

शब्द ५

॥ राग सोरठ ॥

जब गुरु शब्द नगारे बाजैं ॥टेक॥
पांच पचीसौ बड़े मवासी§ सुनि के डंका भाजैं ॥१॥

---

*शब्द चैतन्य अर्थात वह जौहर जिसको संतो ने शब्द करके पुकारा है। †लेजुर, रज्जू, रस्सी। ‡तुम्हारे समान। §ज़बरदस्त।

दृढ़ दस्तक ले ज्ञान सजावल जाय नगर के माहीं॥२॥
हरि के धाम भजन कर* मांगे चित्त चौधरी पाहीं ॥३॥
कानूंगोय लोभ के खोटे छल बल पाहीं झूठे ॥४॥
काम किसान औ मोह मुकद्दम सबै बांधि कर लूटे ।५।
दस्ला आमिल मद को मातो पकरि गांव सूं काढ़ै ।६।
मन राजा को निश्चल झंडा प्रेम प्रीत हित गाड़ै ।७।
सुबुधि दिवान सील को बकूसी जत को हाकिम भारी ।८।
धर्म कर्म संतोष सिपाही जाके अज्ञाकारी ॥९॥
सांच कारिन्दा औ पटवारी धीरज नेम बिचारै॥१०॥
दया छिमा औ बड़ी दीनता पूरी जमा संभारै ॥११॥
मगन होय चौकस कन† करिकैसुमतिजेवरी‡स।पै।१२।
दरसन द्रव्य ध्यान को पूरन बांटा पावै आपै ।१३।
श्री सुकदेव अमल करि गाढ़ो सूबस देस नसावै ।१४।
चरनदास हूं तिन को नायब तल परवाना पावै ॥१५॥

शब्द ६

॥ राग करखा ॥

परसिया देस जहं भेस नाहीं ।
घाट तिस लखि जहां बाट सूझै नहीं
सुरति के चांदने संत जाईं ॥१॥

---

*महसूल, लगान । †खेत की पैदावार का कूत या तख़मीना
‡ डोरी ।

चंद खोड़स दिपैं गंग उलटी बहै
सुखमना सेज पर रूप* दमकै ।
तासु के ऊपरै अमी को ताल है
झिलमिली जोत परकास चमकै ॥ २ ॥
चारि जोजन परे सून्य अस्थान है
तेज अति सून्य परलोक राजै ।
द्वार पच्छिम धसे मेरु हीं दन्ड हो
उलट करि आय काजे बिराजै ॥ ३ ॥
नूर जगमग करै खेल आगाध है
बेद हूं कहे नहिं पार पावैं ।
गुरुमुखी जाइ हैं अमर पद पाइ हैं
सीस का लोभ तजि पंथ धावैं ॥ ४ ॥
तीन सुन छेदि रनजीत चौथे बसै
जन्म औ मरन फिर नाहिं होई ।
चरनदास करि बास सुकदेव बकसीस सूं
पूज बेगम पुरी अमर सोई ॥ ५ ॥

शब्द ७

॥ राग सोरठ ॥

गुरु बिन वह घर कौन दिखावै ।
जेहिं घर अगिन जलै जल माहीं यह अचरज दरसावै।१

*जोति ।

काम धेनु जहं ठाढ़ी सो हैं नैन हाथ बिन दुहना।
घाये* दूधा थोड़ा देवै भूखे देवै दूना ॥ २ ॥
पीवैं जन जगदीस पियारे गुरुगम बहुत अघावैं।
मूरख कायर और अजोगी सो ये नेक न पावैं ॥३॥
अमृत अंचवै वा पद पहुंचै महा तेज को धारै।
होय अमर निस्चल ह्वै बैठै आवा गवन निवारै ॥४॥
भेद छिपावै तौ फल पावै काहू से नहिं कहिये।
वह अद्भुत है ठौर अनूठी बड़ भागन सूं लहिये ॥५॥
या साधन के बहु रखवारे ऋषि मुनि देवत+ जोगी।
करन न देवैं बुधि हरि लेवैं होय न गोरस भोगी ॥६॥
लोभी हलके को नहिं दीजै कहैं सुकदेव गोसाईं।
चरनदास त्यागी वैरागी ताहि देहु गहि बांहीं ॥७॥

शब्द ८

॥ राग सोरठ ॥

गुरु गम मगन भया मन मेरा।
गगन मंडल में निज घर कीन्हो पंच विषै नहिं घेरा ॥१॥
प्यास छुधा निद्रा नहिं व्यापी अमृत अंचवन कीन्हा।
छूटी आस बास नहिं कोई जग में चित नहिं दीन्हा ॥२॥

*अघाये। +देवता।

दरसी जोति परम सुख पायो सब ही कर्म जलावै ।
पाप पुन्न दोऊ भय नाहीं जन्म मरन बिसरावै ॥३॥
अनहद आनंद अति उपजावै कहि न सकूं गति सारी ।
अति ललचावै फिर नहिं आवै लगी अलख सूं यारी ।४।
हंस कमल दल सतगुरु राजैं रुचि रुचि दरसन पाऊं ।
कहि सुकदेव चरनहीं दासा सब बिधि तोहि बताऊं ।५।

शब्द ९

॥ राग रामकली ॥

वह अच्छर कोइ बिरला पावै ।
जा अच्छर के लाग न बिंदी सतगुरु सैनहिं सैन बतावै।१
छर ही नाद बेद अरु पंडित छर ज्ञानी अज्ञानी ।
बांचन अच्छर छर ही जानो छरही चारौ बानी॥२॥
ब्रह्मा सेस महेसर छर ही छर ही त्रैगुन माया ।
छर ही सहित लिये औतारा छर हूं तक जहँ माया ।३।
पांचो मुद्रा जोग जुक्ति छर छर ही लगै समाधा।
आठौ सिद्धि मुक्ति फल छरही छर ही तन मन साधा४
रवि ससि तारा मंडल छरही छर ही धरनि अकासा ।
छर ही नीर पवन अरु पावक नर्क स्वर्ग छर बासा।।५
छर ही उतपति परलय छर ही छर ही जानन हारा ।
चरनदास सुकदेव बतावैं निःअच्छर है सब सूं न्यारा ॥६॥

शब्द १०

॥ राग धनाश्री ॥

जो जन अनहद ध्यान धरै ॥ टेक ॥
पाँचौ निश्चल चंचल थाकै जीवत ही जु मरै ॥ १ ॥
सोधै मूलबंध दै राखै आसन सिद्ध करै ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुरति लाय ठहरावै कुंभक पवन भरै ॥ ३ ॥
घन गरजै अरु बिजुली चमकै कौतुक गगन धरै ॥ ४ ॥
बहुल भाँति जहँ बाजन बाजैं सुनि सुनि सिंधु अरै* ॥५॥
सहज सहज मैं हो परकासा बाधा सकल हरै ॥ ६ ॥
जग की आस बास सब टूटै ममता मोह जरै ॥ ७ ॥
सून्य सिखर पर आपा बिसरै काल सूं नाहिं डरै ॥८॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं सब गुन ध्यान धरै ॥ ९ ॥

शब्द ११

॥ राग धनाश्री ॥

जब से अनहद घोर सुनी ।
इन्द्री थकित गलित मन हूवा आसा सकल भुनी ॥१॥
घूमत नैन सिथिल भइ काया अमल जु सुरत सनी ।
रोम रोम आनंद उपज करि आलस सहज भनी ॥२॥

*ऐसे मधुर बाजे कि जिनकी धुनि से समुद्र की लहरें थिर हो जायं। दूर हो।

मतवारे ज्यों शब्द समाये अंतर भींज कनी ।
करम भरम के बंधन छूटे दुविधा बिपति हनी ॥३॥
आपा बिसरि जक्त कूं बिसरो कित रहिं पांच जनी ।
लोक भोग सुधि रही न कोई भूले ज्ञानि गुनी ॥ ४ ॥
हो तहँ लीन चरनहीं दासा कहै सुकदेव मुनी ।
ऐसा ध्यान भाग सूं पैये चढ़ि रहै सिखर अनी* ॥५॥

शब्द १२

॥ राग धनाश्री ॥

सहज गति ज्ञान समाधि लगाई ।
रूप नाम जहँ किरिया छूटी, हौं मैं रहन न पाई ॥१॥
बिन आसन बिन संजम साधन, परमातम सुधि पाई।
सिव सक्ती मिलि एक भये हैं, मन माया निहुराई† ॥२॥
मगन रहौं दुख सुख दोउ मेटे, चाह अचाह मिटाई ।
जीवन मरन एक सूं लागै, जब तें आप गँवाई ॥३॥
मैं नाहीं नख सिख हरि राजैं, आदि अन्त मधयाई ।
संका कर्म कौन कूं लागै, का की होय मुक्ताई ॥४॥
सकल आपदा व्याधि टरी सब, दुई कहां मो माहीं ।
सब हमहीं रामै नाहिं पैये सब रामै हम नाहीं ॥५॥
नित आनन्द काल भय नाहीं, गुरु सुकदेव समाधी ।
चरनदास निज रूप समाने, यह तौ समझ अगाधी॥६॥

* नोक । † झुके, ज़ेर हुए ।

शब्द १३

॥ राग झरखा ॥

ब्रह्म दरियाव नाहिं वार पारा ।
आदि अरु मध्य कहुं अंत सूझै नहीं
नेत ही नेत बेदन पुकारा ॥ १ ॥
मूल परकिर्त सी बहुत लहरैं उठैं
सकै को पाय गुन हैं अपारा ।
बिरंच* महादेव से मीन बहुतै जहां
होयं परगट कभी गोत मारा ॥ २ ॥
तासु में बुदबुदे अंड उपजैं मिटैं
गुरु दई दृष्टि जा सूं निहारा ।
छका छबि देखि कै अतिथि का भेख करि
जगे जब भाग निरखी बहारा ॥३॥
मरजिया† पैठिया थाह पाई नहीं
थका ह्वाहीं रहा फिर न आया ।
गया था लाभ कूं मूल खोया सबै
भया आश्चर्ज आपन गंवाया ॥ ४ ॥

---

* ब्रह्मा । † जो मोती निकालने को समुद्र में डुबकी लगाते हैं ।

पाल* खिन सिद्धि अरु निरा आनंद है
आप ही आप हो निरअधारा ।
चरनदास सुकदेव दोऊ तहां रल मिले,
तुरत हीं मिटि गया खोज सारा ॥ ५ ॥

शब्द १४

॥ राग सीठना ॥

सुन सुरत रंगीली हो कि हरि सा यार करौ ॥टेक॥
जब छूटै बिघन बिकार कि भौजल तुरत तरौ ॥१॥
तुम त्रैगुन छैल† बिसारि गगन में ध्यान धरौ ॥२॥
रस अमृत पीवो हो कि बिषया सकल हरौ ॥ ३ ॥
करि सील संतोष सिंगार छिमा की मांग भरौ ॥४॥
अब पांचो तजि लगवार अमर घर पुरुष बरो ॥५॥
कहैं चरनदास गुरु देखि पिया के पांव परो ॥ ६ ॥

शब्द १५

॥ राग सीठना ॥

टुक रंग महल में आव कि निरगुन सेज बिछी ।
जहं पवन गवन नहिं होय जहां जा सुरति बसी ॥१॥

---

* रोक, परदा । † छैल चिकनिया ।

जहं त्रैगुन बिन निर्बान जहां नहिं सूर ससी ।
जहं हिल मिलि कै सुख मान मुक्तिकी होयहंसी ॥२॥
जहं पिय प्यारी मिलि एक कि आसा दुई नसी ॥
जहं चरनदास गलतान कि सोभा अधिक लसी ॥३॥

शब्द १६

॥ राग सोरठ ॥

ऐसा देस दिवाना रे लोगो जाय सो माता होय ।
बिन मदिरा मतवारे झूमैं जन्म मरन दुख खोय ॥१॥
कोटि चंद सूरज उजियारो रवि ससि पहुंचत नाहीं।
बिना सीप मोती अनमोलक बहु दामिनि दमकाहीं॥२॥
बिन ऋतु फूले फूल रहत हैं अमृत रस फल पागे ।
पवन गवन बिन पवन बहत है बिन बादर झरि लागे३
अनहद शब्द भँवर गुंजारै संख पखावज बाजैं ।
ताल घंट मुरली घनघोरा भेरि दमामे गाजैं ॥४॥
सिद्धि गर्जना अति हीं भारी घुंघुरू गति झनकारैं ।
रंभा नृत्य करैं बिन पग सूं बिन पायल ठनकारैं॥५॥
गुरु सुकदेव करैं जब किरपा ऐसो नगर दिखावैं ।
चरनदास वा पग के परसे आवा गवन नसावैं ॥६॥

शब्द १७

॥ राग होली ॥

पांच सखी लेलार* हेली काया महल पग धारिये ॥टेक॥
जोग जुक्ति डोला करौ हेली प्रान अपान कहार ॥१॥
कुज कुंज सब देखिये हेली नाना बाग बहार ॥२॥
मान सरोवर न्हाइये हेली सदा बसन्त निहार ॥३॥
बिना सीप मोती बने हेली बिन गूंद† फूलन हार ॥४
बिन दामिन चमकार हैं हेली बिन सूरज उंजियार ॥५॥
अनहद उत बाजे बजैं हेली अचरज बहुतक ख्याल ॥६॥
तेज पुंज की सेज पै हेली कागा होहिं मराल ॥ ७ ॥
श्री सुकदेव कृपा करैं हेली जब पावै यह भेद ॥८॥
चरनदास पिय सूं मिलै हेली छूटैं जग के खेद ॥ ९ ॥

शब्द १८

॥ राग मलार ।

साधो समुझौ अलख अरूपा ।
गुप्त सूं गुप्त प्रगट सूं परगट, ऐसा है निज रूपा ॥१॥
भींजै नहीं नीर सूं वह तत, ताहि सस्त्र नाहिं काटै ।
छोटा मोटा होय न कबहूं, नहीं घटै नाहिं बाढ़ै ॥२॥
पवन कभी नाहिं सोखै ता कूं, पावक तेज न जारै ।
सीत उस्न दुख सुख नाहिं पहुंचै, ना वह मरै न मारै॥३॥

ए । ागुथे हुसाद । नबा*†

इक रस चेतन अचरज दरसै, जा सम तुल नहिं कोई।
ता पटतर कोइ दृष्टि न आवै, वही वही पुनि वोई ॥४॥
भीतर बाहर पूरि रह्यौ है, अन्ड पिन्ड सूं न्यारा।
सुकदेवा गुरु भेद बतायौ, चरनहिं दासा वारा ॥ ५ ॥

शब्द १९

॥ राग धनाश्री ॥

निरंतर अटल समाधि लगाई।
ऐसी लगी टरै नहिं कबहूं करनी आस छुटाई ॥१॥
काकौ जप तप ध्यान कौन कूं कौन करै अब पूजा।
कियो बिचार नेक नहिं निकसै हरि बिन औरन दूजा ॥२॥
मुद्रा पांच सहज गति साधी आलस आस नसोई*।
सब रस भूल ब्रह्म जब सोधा आप बिसर्जन होई ॥३॥
भूलो बंध मुक्ति गति साधन ज्ञान बिबेक भुलाना।
आतम अरु परमातम भूला मन भयो तत गलताना ४
अचल समाधि अंत नहिं ता को गुरु सुकदेव बताई।
चरनदास की खोज न पैये सागर लहरि समाई ॥५॥

शब्द २०

॥ राग केदारा व सोरठ।

सो लखि हम निर्गुन झरि लाई।
जहां न वेद कितेब पहुंचै नहीं ठकुराई ॥ १ ॥

* नाश हुई।

चारि बरन आस्रम नाहीं नहीं कर्मना काई ।
नरक अरु बैकुंठ नाहीं नहीं तन ताई ॥२॥
प्रेम अरु जहं नेम नाहीं लगन ना लाई ।
आठ अंग जहं जोग नाहीं नहीं सिद्धाई ॥३॥
आदि अरु जहं अंत नाहीं नहीं मध्याई ।
एक ब्रह्म अखन्ड अबिचल माया ना राई ॥४॥
ज्ञान अरु अज्ञान नाहीं नहीं मुक्ताई ।
चरनदास सुकदेव सम* तहं दुई जरि जाई ॥५॥

शब्द २१

॥ राग हिंडोलना ॥

झूलत हरि जन संत भक्ति हिंडोलने ॥ टेक ॥
नाम के दृढ़ खम्भ रोपे प्रेम डोरी लाय ।
टेक पटरी बैठ सजनी अति अनंद बढ़ाय ॥ १ ॥
ध्यान के जहं मेघ बरसैं होय उमंग हुलास ।
गुरुमुखी जहं समझ भीजैं पूर्न हरि के दास ॥ २ ॥
बुधि बिबेक बिचारि गावैं सखी सहेली साथ ।
अगम लीला रटैं सजनी जहां ब्रह्म बिलास ॥ ३ ॥
परम गुरु श्री जनक झूलैं झूलैं गुरु सुकदेव ।
चरनदास सखि सदा झूलैं कोइ न पावै भेव ॥ ४ ॥

---

*बर:बर, एक ।

शब्द २२

॥ राग झूलना ॥

गुरु दया जोग यहि बिधि कमायो॥ टेक ॥

मूल कूं सोधि संकोच करि संखिनी
खैंचि आपान उलटो चलायो ॥ १ ॥

बंध पर बंध जब बंध तीनो लगैं
पवन भइ थकित नभ गर्जि आयो ॥२॥

द्वादसा पलट करि सुरति दो दल धरी
दसो परकार अनहद बजायो ॥ ३ ॥

रोक जब नवन कूं द्वार दसवें चढ़ी
सून्य के तख्त अनँद बढ़ायो ॥ ४ ॥

सहस दल कमल को रूप अद्भुत महा
अमी रस उमंग आ झरि लगायो ॥५॥

तेज अति पुंज पर लोक जहं जगमगे
कोटि छबि भानु परकास लायो ॥ ६ ॥

उनमुनी और चित हेत करि बसि रहो
देखि निज रूप मनुवां मिलायो ॥ ७ ॥

काल अरु ज्वाल जग ब्याधि सब मिटि गई
जीव सूं ब्रह्म गति बेगि पायो ॥ ८ ॥

चरनदास रनजीत सुकदेव की दया सूं
अभय पद परसि अवगति समायो॥ ९ ॥

शब्द २३

॥ राग सारंग व बिलावल व सोरठ ॥

साधो अजब नगर अधिकाई ।

औघट घाट बाट जहं बांको उस मारग हम जाई ।१।

स्रवन बिना बहु बानी सुनिये बिन जिभ्या स्वर गावैं ।

बिना नैन जहं अचरज दीखै बिना अंग लिपटावैं ।२।

बिना नासिका बास पुष्प की बिना पांव गिर* चढ़िया ।

बिना हाथ जहं मिली धाय कै बिन पाधा जहं पढ़िया।३।

ऐसा घर बड़भागी पाया पहिरि गुरू का बाना ।

निस्चल ह्वै के आसा मारी मिटि गयो आवन जाना।४।

गुरु सुकदेव करी जब किरपा अनुभौ बुद्धि प्रकासी ।

चौथे पद में आनंद भारी चरनदास जहं बासी ॥५॥

शब्द २४

॥ राग सीठना ॥

टुक निर्गुन छैला सूं, कि नेह लगाव री ।

जा को अजर अमर है देस, महल बेगमपुर री ॥१॥

जहं सदा सोहागिन होय, पिया सूं मिलि रहु री ।

जहं आवा गवन न होय, मुक्ति चेरी तेरी ॥२॥

कहैं चरनदास गुरु मिले, सोई ह्वां रहु बौरी ।

तब सुख सागर के बीच, कलहरी† ह्वै रहु री ॥ ३ ॥

*पहाड़ । †कलवारिन ।

शब्द २५

॥ राग सोठना ॥

तू सुन हे लंगर बौरी ॥ टेक ॥
तू पांचौ घेरि पचीसो घेरी बिषै बासना की है चेरी ।
बारी बारी* दौरी ॥१॥
तैं पिय भूली चौरासी डोली अंग अंग के सुख में फूली ।
माया लाई ठौरी† ॥ २ ॥
तैं काम क्रोध सूं नेह लगायो मनसाना सब जग भरमायो
मोह यार कांको री ॥ ३ ॥
चरनदास सुकदेव बतावैं निर्गुन छैला तोहिं मिलावैं ।
जो टुक चेतन हो री ॥ ४ ॥

शब्द २६

॥ राग हेली ॥

वह घर कैसा होय हेली जित के गये न बाहुरे‡ ।
अमर पुरी जा सूं कहैं हेली मुक्ति धाम है सोय ॥टेक॥
बिकट घाट वा ठौर को हेली सठ नाहिं पावैं पंथ ।
गुरुमुख ज्ञानी जाइ हैं हरि सूं सन्मुख संत ॥१॥
त्रैगुन मति पहुंचै नाहिं हेली कहौ ऋतू ह्वां नाहिं ।
रवि ससि दोऊ ह्वां नहीं नहीं धूप नाहिं छांहि ॥२॥

* बार बार । † निवास, ठिकाना । ‡ लौटे ।

अवधि नहीं काया नहिं हेली कलह कलेस न काल ।
संसय सोक न पाइये नहिं माया कूं जाल ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव दया करैं हेली चरनदास लहै देस ।
बिन सतगुरु नहिं पाइई जो नाना कर भेस ॥ ४ ॥

शब्द २७

॥ राग सोरठ ॥

हो अवगति जो जानै सोई जानै ।
सब की दृष्टि परे अविनासी कोइ कोइ जन पहिचानै ॥१॥
रेख जहां नहिं खिंच सकै रे ठहरै ना ह्वां राई ।
चीत्त चितेरा* ना सकै रे पुस्तक लिखा न जाई ॥२॥
सेत स्याम नहिं राता† पीरा हरी भांति नहिं होई ।
अति आसूंघ अदृष्ट अकथ है कहि सुनि सकै न कोई ॥३॥
सर्बस में अरु सब देसन में सर्ब अंग सब माहीं ।
फटै जलै भीजै नहिं छीजै हलै चलै वह नाहीं ॥४॥
नहिं गाढ़ा नहिं झीना कहिये नहिं सूच्छम नहिं भारी ।
बाला तरुना बूढ़ा नाहीं ना वह पुरुष न नारी ॥५॥
नहीं दूर नहिं निकट हमारे नहीं प्रगट नहिं गूझै‡ ।
ज्ञान आंख की पलक उघारो जब देखो रे सूझै ॥६॥
वा सूं उतपति परलय होई वह दोऊ तें न्यारा ।
चरनदास सुकदेव दया सूं सोई तत्त निहारा ॥७॥

* चित्त से चिंतवन करना । † लाल रंग का । ‡ छिपा हुआ ।

शब्द २८

राग ईमन

सखी री हिलि मिलि रहिया पीव ॥टेक॥

पुष्प मध्य ज्यों गंध बिराजै पिन्ड माहिं ज्यों जीव ॥१॥
जैसे अग्नि काठ के अंतर लाली है मेंहदीव ॥ २ ॥
माटी में भांड़े हैं तैसे दूध मध्य ज्यों घीव ॥ ३ ॥
सुकदेवा गुरु तिमिर नसायो ज्ञान दियो कर दीव* ॥४॥
चरनदास कहैं परगट दरसो अमर अखंडित सीव† ॥५॥

शब्द २९

राग बिलास बिहागरा

गुरू बिन कौन डुबोवन हारा ।

ब्रह्म समुद्र में जो कोइ बूड़ो छुटि गये सकल बिकारा ॥१॥
सिंधु अथाह अगाध अचल है जा को वार न पारा ।
वा की लहरि मिटत वाही में कौन तरै को तारा ॥२॥
त्रैगुन रहित सदा हीं चेतन ना काहू उनहारा‡ ।
निराकार आकार न कोई निर्मल अति निर्धारा ॥३॥
अकरी§ अलख अरूप अनादी तिमिर नहीं उजियारा ।
ता में अन्ड दिपत‖ ऐसे करि ज्यों जल मद्धे तारा ॥४॥
काल जाल भय भूती नाहीं तहां नहीं भ्रम भारा ।
चरनदास सुकदेव दया सूं बूड़ि गये ही पारा ॥५॥

---

* ज्ञान का हाथ में दीपक दिया । † स्वामी । ‡ पटतर, मिसल ।
§ अकर्ता । ‖ चमकता है ।

शब्द ३०

॥ राग धनाश्री व बिलावल व सोरठ ॥

साधो भाई यह जग यों सत नाहीं ।
मीन पहार समुद बिच मिरगा खेत अकासे माहीं ।१।
जल की पोट कोट धूवां कौ अखिल ब्रह्म को तीरं ।
बांझ को पूत सींग सस्सा* को मृग तृस्ना को नीरं ।२।
स्वप्न को भूप द्रव्य स्वपने को अरु जंगल को द्वारं ।
गनिका सील नाच भूतन को नारि सों ब्याहत नारं ।३।
मावस को ससि रैन को सूरज दूध नरन की छाती ।
यह सब कहनि कहावनि देखी चींटी ले भागी हाथी ।४।
ऐसेहि झूंठ जगत सच नाहीं भेद बिचारो पायो ।
चरनदास सुकदेव दया सूं सांचहि सांच मिलायो ॥५॥

शब्द ३१

॥ राग धनाश्री ॥

कोइ जानै संत सुजान उलटे भेद कूं ॥ टेक ॥
बृच्छ चढ़ो माली के ऊपर धरती चढ़ी अकास ।
नारि पुरुष बिपरीत भये हैं देखत आवै हांस ॥१॥
बैल चढ़ो संकर के ऊपर हंस ब्रह्म के सीस ।
सिंह चढ़ो देबी के ऊपर गुरुहीं की बकसीस ॥२॥

---

*खरहा ।

नाव चढ़ी केवट की ऊपर सुत को गोदी माय ।
जो तू भेदी अमर नगर को तौ तू अर्थ बताय ॥३॥
चरनदास सुकदेव सहाई अब कह करिहै काल ।
बांबी उलटि सर्प में पैठी जब सूं भये निहाल ॥४॥

शब्द ३२

॥ राग मलार ॥

चहुं दिस झिलमिल झलक निहारी ।
आगे पीछे दहिने बायें तल ऊपर उंजियारी ॥ १ ॥
दृष्टि पलक त्रिकुटी ह्वै देखै आसन पद्म लगावै ।
संजम साधै दृढ़ आराधै जब ऐसी सिधि पावै॥ २ ॥
बिन दामिनि चमकार बहुत हीं सीप बिना लर मोती ।
दीप मालिका बहु दरसावैं जगमग जगमग जोती ॥३॥
ध्यान फलै तब नभ के माहों पूरन हो गति सारी ।
चांद घने सूरज अनकी* ज्यों सूभर† भरिया भारी ।४।
यह तौ ध्यान प्रतच्छ बताओ सरधा होय तो कीजै ।
कहि सुकदेव चरन हीं दासा सो हम सूं सुनि लीजै ॥५॥

शब्द ३३

॥ राग सोरठ ॥

हमारे गुरु मारग बतलाया हो ।
आनि देव की सेवा त्यागी अज‡ अबिनासी ध्याया हो१

* अनेक । † बालू के कण जो धूप में चमकते हैं । ‡ अजर, अजन्मा ।

हरि पूरन परस्यों निस्चै सूं छांड़्यों झूंठो माया हो।
इक रस आतम नित हों जानौं छिन भंगी है काया हो॥२॥
चाहौ मुक्ति करौ तन किरिया* भर्म अधिक भरमाया हो।
बो करि पेड़ बबूल सूल के आम कहो किन पाया हो॥३॥
अपना खोज किया नहिं कबहूं जल पाहन भटकाया हो।
जैसे फल सेवत सेमर को कीर† अधिक पछताया हो॥४॥
ज्ञानपदारथकठिनमहानिधिबिनभेदोकिनपाया हो।
चरनदास घट सोहं सोहं तामें उलटि समाया हो॥५॥

शब्द ३४

॥ राग बिहागरा ॥

गुप्त मते की बात हेली जानै सोइ जानै।
पसू ज्ञान इजमत‡ कूं देखै अन भुस एकै ठानै॥१॥
चलनी की गति सबकी मति है मन में अधिक सयानै।
गहि असार सार कूं डारै निस्चल बुधि नाहिं आनै॥२॥
हूं§ गूंगो जग को नहिं सूझै सैन नहीं कोइ मानै।
का सूं कहूं अरु को सुनै सजनो कहूं तो को पहिचानै॥३॥
सत्य ब्रह्म को जानत नाहीं मूरख मुग्ध अयानै।
चरनदास समुझत नहिं भोंदू फिर फिर झगरो टानै॥४॥

*तन कृया से मुक्ति नहीं हो सकती। †तोता। ‡करामात।
§गूंगे का "हूं" करना।

शब्द ३५

॥ राग हिंडोलना ॥

झूलत गुरुमुख संत अलख हिंडोलने ॥टेक॥

नाभि भृकुटी खम्भ रोपे सोहं डोरी लाय ।
सुरति पटही* बैठि सजनी छिन आवै छिन जाय ॥१॥

मन मनसा दोउ लगे झूलन धारना ले संग ।
ध्यान झोंके देत सजनी भलो लागो रंग ॥ २ ॥

सखि सहेली सिमिटि आईं पेंग पेंगन नेह ।
बूंद आनंद सब भिगोई सघन बरसै मेह ॥ ३ ॥

चार बानी खड़ी गावैं महा रंगीली नार ।
मुक्ति चारौ मालिनी गुहि गुहि लावैं हार ॥४॥

त्रिगुन बकुला उड़न लागे देखि बादल लय† ।
संग पिय के सदा झूलैं ता तें लगै न भय ॥ ५ ॥

चरनदास कूं नित झुलावैं ईस झुलैं सुकदेव ।
सिव सनकादिक नारद झूलैं करि करि गुरु की सेव॥६॥

---

* पटरा । † समा ।

सावन व हिंडोला झूला

शब्द १

॥ राग हिंडोलना हेली ॥

छूटे काल जंजाल हेली, चरन कमल के आसरे ।
भर्म भूत सबहीं छुटे री हेली सौन[*] नछत्तर लाल[†] । टेक ।
जंतर मंतर सब छुटे री हेली छूटे बीर मसान ।
मूठ डीठ[‡] अब ना लगै री नहीं घात की बान ॥१॥
सनीचर बल अब ना चलै री हेली नहीं राहु अरु केतु ।
मंगल बिरस्पति ना दहैं री नहीं भोग उन देतु ॥२॥
जोति बाल परसूं नहीं री हेली मानूं न देवी देव ।
सतगुरु देव बताइया सांचो झूठो भेव ॥ ३ ॥
अरसठ तीरथ ना फिरूं री हेली पूज न पाथर नीर ।
श्री सुकदेव छुटाइया जन्म मरन की पीर ॥ ४ ॥
निस्चल होइ हरि को भई री हेली सुमिरूं निर्मल नांव ।
अनन्य भक्ति दृढ़ सूं गही मारग आन न जांव ॥५॥
गोबिंद तजि औरन भजै री हेली जाके मुखड़े छार[§] ।
चरनदास यों कहत हैं राम उतारै पार ॥ ६ ॥

---

[*] स्रवन । [†] साथ । [‡] जादू टोना । [§] धूल ।

शब्द २

॥ राग सावन ॥

सखि सजनी हे तेरो पिया तेरे पास ।
अरी बौरी इत उत भटकी क्यों फिरै जी ॥१॥
सखि सजनी हे सुरति निरति करि देख ।
अरी बौरी अपने महल रंग मानिये जी ॥ २ ॥
सखि सजनी हे मान अहं सब खोय ।
अरी बौरी यह जोबन थिर ना रहै जी ॥ ३ ॥
सखि सजनी हे बालम सन्मुख होय ।
अरी बौरी पिछली अर* सब खोइये जी ॥ ४ ॥
सखि सजनी हे पिया मिलन को साज ।
अरी बौरी न्हाय सिंगार बनाइये जी ॥ ५ ॥
सखि सजनी हे चित की चौकी धराय ।
अरी बौरी नाइन सुमति बुलाइये जी ॥ ६ ॥
सखि सजनी हे सुचरचा अगिन जराव ।
अरी बौरी नीर गरम करि न्हाइये जी ॥ ७ ॥
सखि सजनी हे जोग उबटनो लगाव ।
अरी बौरी कर्म को मैल उतारिये जी ॥ ८ ॥
सखि सजनी हे करनी कंगही बहाव ।
अरी बौरी बेनी मुक्ता† गुंधाइये जी ॥ ९ ॥

---

*अड़, टेक । †मोती ।

सखि सजनी हे गुरु के चरन चित लाव ।
अरी बौरी सत संगति पग लागिये जी ॥ १० ॥
सखि सजनी हे लाज सिंदूर निकासि ।
अरी बौरी खोलि सिंगार बनाइये जी ॥ ११ ॥
सखि सजनी हे नवधा भूषन धारि ।
अरी बौरी जा सूं पिया रिझाइये जी ॥ १२ ॥
सखि सजनी हे प्रीत को काजल आंज ।
अरी बौरी प्रेम की मांग संवारिये जी ॥ १३ ॥
सखि सजनी हे बुधि वेसर सजि लेहि ।
अरी बौरी पान बिचारि चबाइये जी ॥ १४ ॥
सखि सजनी हे दया की मेंहदी लगाव ।
अरी बौरी सांचो रंग ना उतरै जी ॥ १५ ॥
सखि सजनी हे धीरज चूनरि लाल ।
अरी बौरी नख सिख सील सिंगारिये जी ॥ १६ ॥
सखि सजनी हे काम क्रोध तजि लोभ ।
अरी बौरी मोह पीहर* सूं जिन करो जी ॥ १७ ॥
सखि सजनी हे पांच सहेली साथ ।
अरी बौरी इन कूं संग न लीजिये जी ॥ १८ ॥
सखि सजनी हे चलौ पिया के पास ।
अरी बौरी सुखमन बाट सोहावनी जी ॥ १९ ॥

* नैहर, मायका ।

सखि सजनी हे गगन मंडल पग धार ।
अरी बौरी पीव मिलै दुख सब हरै जी ॥ २० ॥

सखि सजनी हे निर्गुन सेज बिछाव ।
अरी बौरी हिलि मिलि कै रंग मानिये जी ॥ २१ ॥

सखि सजनी हे पावैगी अटल सोहाग ।
अरी बौरी अजर अमर घर निर्मल जी ॥ २२ ॥

सखि सजनी हे गुरु सुकदेव असीस ।
अरी बौरी चरनदास मनसा फलै जी ॥ २३ ॥

शब्द ३

॥ राग सावन ॥

भागौ साथिन हे यहि झूले मत झूल ।
अरी हेली भर्म भूमि या देस की जी ॥ टेक ॥

भागौ साथिन हे बदरा* माया को रूप ।
अरी हेली कुमति बूंद जित तित परैं जी ॥ १ ॥

भगौ साथिन हे कर्म बृच्छ की बेलि ।
अरी हेली वारी फल लगे विष भरे जी ॥ २ ॥

भागौ साथिन हे दुर्मति हरियर दूब ।
अरी हेली छल रूपी फूले फूल हैं जी ॥ ३ ॥

---

* बादल ।

भागौ साथिन हे तिरगुन बोलत मोर ।
अरी हेली दम्भ कपट बकुला फिरैं जी ॥ ४ ॥
भागौ साथिन हे पाप पुन्न दोउ खम्भ ।
अरी हेली नर्क* स्वर्ग झोटा लगै जी ॥ ५ ॥
भागौ साथिन हे मैं मेरी बंधी डोर ।
अरी हेली तृस्ना पटरी जित धरी जी ॥ ६ ॥
भागौ साथिन हे झूलत चावहिं चाव ।
अरी हेली नर नारी सब झूलहिं जी ॥ ७ ॥
भागौ साथिन हे तपसी जोगी गये भूल ।
अरी हेली फल चाहत अरु कामना जी ॥ ८ ॥
भागौ साथिन हे आसा झुलावत नारि ।
अरी हेली पांच पचीस मिलि गावहिं जी ॥ ९ ॥
भागौ साथिन हे या जग में ऐसी भूल ।
अरी हेली चरनदास झूलत बचे जी ॥ १० ॥
भागौ साथिन हे इत तजि उत कूं चाल ।
अरी हेली अमर नगर सुकदेव के जी ॥ ११ ॥

शब्द ४

॥ राग हिंडोला हेली ॥

तरसैं मेरे नैन हेली राम मिलन कब होयगो ॥टेक॥
पिय दरसन बिन क्यों जिऊं री हेली कैसे पाऊं चैन।
तीर्थ वर्त बहुतै किये री चित्त दै सुने पुरान ॥१॥
बाट निहारत ही रहूं री हेली सुधि नहिं लीनी आय।
यह जोबन यों ही चलो री चालो जन्म सिराय ॥२॥
बिरहा दल साजे रहै री हेली छिन छिन में दुख देहि।
मन लालन* के बस परो भई भाक† सी देहि ॥३॥
गुरु सुकदेव कृपा करो जो हेली दीजे बिरह छुटाय।
चरनदास पिय सूं मिलै सरन तुम्हारी धाय ॥४॥

शब्द ५

॥ राग हिंडोला ॥

मो बिरहिन की बात हेली बिरहिन हो सोइ जानि है।
नैन बिछोहा जानती री हेली बिरहै कीन्हो घात ।टेक।
या तन कूं बिरहा लगो री हेली ज्यों घुन लागो काठ।
निस दिन खाये जातु है देखूं हरि की बाट ॥ १ ॥
हिरदे में पावक जरै री हेली तपि नैना भये लाल।
आंसू पर आंसू गिरैं यही हमारी हाल ॥ २ ॥

*प्रीतम। † भट्टा, पजावा।

प्रीतम बिन कल ना परै री हेली कलकल* सब अकुलाहिं।
डिगी† परूं सत‡ ना रहो कब पिय पकरैं बांहिं ॥३॥
गुरु सुकदेव दया करैं री हेली मोहिं मिलावैं लाल।
चरनदास दुख सब भजैं सदा रहूं पति नाल§ ॥४॥

---o---

बसंत व होली

शब्द १

॥ राग बसंत ॥

मेरे सतगुरु खेलत नित बसंत।
जा की महिमा गावत साध संत ॥ १ ॥
ज्ञान बिबेक के फूले फूल।
जहं साखा जोग अरु भक्ति मूल ॥ २॥
प्रेम लता जहं रही झूल।
सत संगति सागर के कूल ॥ ३ ॥
जहं भर्म उड़त है ज्यों गुलाल।
अरु चोवा चरचै निरुचय वाल ॥४॥
जहं सील छिमा को बरसै रंग।
काम क्रोध को मान भंग ॥५॥
हरि चरचा जित है अनंत।
सुनि मुक्त होत सब जीव जंत ॥६॥

---

* व्याकुल। † गिरी। ‡ सत्ता, बल। § साथ।

आन धर्म सब जाहिं खोय ।
राम नाम की जै जै होय ॥ ७ ॥
जहं अपने पिय कूं ढूंढ़ि लेव ।
अरु चरन कंवल में सुरति देव ॥८॥
कहैं चरनदास दुख दुंद जाहिं ।
जब प्रीतम सुकदेव गहैं बांहिं ॥९॥

शब्द २

॥ राग बसंत ॥

वह बसंत रे वह बसंत ॥टेक ॥
कोइ बिरला पावै वह बसंत ।
जा की अद्भुत लीला रँग अनंत ॥१॥
जहँ झिलमिलि झिलमिलि है अपार ।
जहँ मोती बरसैं निराधार ॥२॥
जहँ फूलन की लागी फुहार ।
जहँ अनहद बाजै बहु प्रकार ॥३॥
जहँ ताल जो बाजै बिना हाथ ।
जहँ संख पखावज एक साथ ॥४॥
जहँ बिन पग घुंघुरू की टकोर ।
जहँ बिन मुख मुरली घना* घोर† ॥५॥

* बहुत या बड़ा † शोर ।

जहं अचरज बाजे और और ।
जहं चंद सूर नहिं सांझ भोर ॥६॥
जहं अमृत झरवै कामधेन ।
जहं मान क्रोध नहिं मोह मैन ॥७॥
जहं पांचौ इन्द्री एक रूप ।
जहं थकित भये हैं मनुष भूप ॥८॥
सुकदेव बतावैं ऐसो खेल ।
चरनदास करौ क्यों न वा सूं मेल ॥९॥

शब्द ३

। होली ।

हिल मिल होरी खेलि लई हो बालम घर पाइया। टेक।
पांच सखी पच्चीस सहेली अनंद मंगल गाइया ॥१॥
समझ बूझ का चोवा चर्चा भर्म गुलाल उड़ाइया ॥२॥
दुई गई जब इच्छा कैसी खेलन सकल बहाइया ।३।
चरनदास बासना तजि कै सागर लहर समाइया ॥ ४॥

शब्द ४

। होली ।

सखी री तत मत ले संग खेलिये रस होरी हो ॥टेक॥
निर्गुन नित निर्धार सरस रस होरी हो ।
सखी री सील सिंगार संवारी हो ॥ १ ॥

दुविधा मान निवार सरस रस होरी हो ।
सखी री वहुरि न ऐसो बार सरस रस होरी हो ॥२॥
रहनी केसर घोरिये रस होरी हो ।
सखी री सत गुन करि पिचकारि ले रस होरी हो ।३।
तम रज को भर मार सरस रस होरी हो ।
सखी री गर्व गुलाल उड़ाइये रस होरी हो ॥ ४ ॥
मोह मटुकिया डारि सरस रस होरी हो ।
सखी री झिलमिल रंग लगाइये रस होरी हो॥५॥
चंदन चरच विचार सरस रस होरी हो ।
सखी री निस्चल सिद्धि समाइये रस होरी हो ॥६॥
रिमझिम झनक फुहार सरस रस होरी हो ।
सखी री सुन्न नगर में निर्तिये रस होरी हो ॥ ७ ॥
अनहद झनक झिंगार सरस रस होरी हो ।
सखी री सैन सुरत सूं समझिये रस होरी हो ॥ ८ ॥
सोहं ब्रह्म खिलार सरस रस होरी हो ।
सखी री पांच पचीसौ रल मिले रस होरी हो ॥९॥
मंगल शब्द उचार सरस रस होरी हो ।
सखी री अलख पुरुष फगुवा लहो रस होरी हो ।१०।
चर्नदास रमैया रमि रह्यो रस होरी हो ।
सखी री दरसो है फाग अपार सरस रस होरी हो ।११।

शब्द ५

। होली ।

हरि पीव कूं पाइया सखि पूरन मेरे भाग ।
सुख सागर आनंद में मैं नित उठि खेलूं फाग ॥१॥
चोवा चंदन प्रीत कै सखि केसर ज्ञान घसाय ।
पुष्प वास सूं जो वह झीनो ता के अंग लगाय।२।
बेरंगी के रंग सूं सखि गागर लई भराय ।
सुन्न महल में जाय कै सखि पिय पर दइ ढरकाय॥३॥
भरम गुलाल जब कर लियो सखि बालम गयो दुराय ।
सतगुरु ने अंजन दियो तब सन्मुख दरसे आय ॥४॥
ताली लाई प्रेम की सखि अनहद नाद बजाय ।
सर्व भई पिय पायकै हम आनंद मंगल गाय ॥५॥
रल मिल प्रीतम ह्वै गये सखि दुई गई सब भाग ।
चरनदास सुकदेव दया सूं पायो अचल सोहाग ॥६॥

शब्द ६

॥ होली ॥

प्रेम नगर के माहिं होरी होय रही ।
जब सों खेली हम हूं चित दै आपन हूं को खोय रही ॥१॥
बहुतन कुल अरु लाज गंवाई रहो न कोई काम ।
नाचि उठैं कभी गावन लागैं भूले तन धन धाम ॥२॥

बहुतन की मति रंग रंगी है जिन को लागो प्रेम।
बहुतन को अपनी सुधि नाहीं कौन करै अस नेम ॥३॥
बहुतन की गदगद ही बानी नैनन नीर ढराय।
बहुतन की बौरापन लागो ह्वां की कही न जाय ॥४॥
प्रेमी की गति प्रेमी जानै जाके लागी होय।
चरनदास उस नेह नगर की सुकदेवा कहि सोय ॥५॥

सारांश निरूपन अंग

शब्द १

॥ राग मंगल ॥

जग में दो तारन कूं नीका।
एक तो ध्यान गुरू का कीजे दूजे नाम धनी का॥१॥
कोटि भांति करि निरचै कीयो संसय रहा न कोई।
सास्तर वेद पुरान टटोले जिन में निकसा सोई ॥२॥
इन हीं के पीछे सब जानो जोग जज्ञ तप दाना।
नौ विधि नौधा नेम प्रेम सब भक्ति भाव अरु ज्ञाना॥३॥
और सबै मत ऐसे मानौ अन्न बिना भुस जैसे।
कूटत कूटत बहुतै कूटा भूख गई नहिं तैसे ॥ ४ ॥
थोथा धर्म वही पहिचानो ता में ये दो नाहीं।
चरनदास सुकदेव कहत हैं समझि देख मन माहीं ॥५॥

॥ गुरु निरूपन ॥

शब्द २

॥ राग मंगल ॥

समझ रस कोइक* पावै हो ।
गुरु बिन तपन बुझै नहीं, प्यासा नर जावै हो ॥१॥
बहुत मनुष ढूंढत फिरैं, अंधरे गुरु सेवैं हो ।
उनहूं को सूझै नहीं औरन कहँ देवैं हो ॥ २ ॥
अंधरे को अंधरा मिलै नारी को नारी हो ।
ह्वां फल कैसे होयगा समझैं न अनारी हो ॥ ३ ॥
गुरु सिष दोऊ एक से एकै व्यवहारा हो ।
गये भरोसे डूबि कै वे नरक मँझारा हो ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं चरनदास सूं इन का मत कूरा हो ।
ज्ञान मुक्ति जब पाइये मिलै सतगुरु पूरा हो ॥५॥

शब्द ३

॥ दोहा ॥

गुरु सेती सतगुरु बड़े, परमेसुर के रूप ।
मुक्ति छांह पहुंचाय दें, जक्त छोड़ावैं धूप ॥
मुरशिद मेरा दिल दरियाई दिल दे अंदर खोजा ।
उस अंदर में सत्तर कावे मक्के तीसों रोज़ा ॥ १ ॥

---

* कोई एक, कोई कोई ।

चौदह तबक़ औलिया जिस में भेंट न होहि जुदाई।
शब्द के बांग निमाज़ में ठाढ़े दरशन जहां खोदाई॥२॥
हवा न हिर्स खुदी नहिं खूबी अनल हक्क़ जहँ बानी।
बे चिराग़ रौशन सब खाने तिस में तख़्त सुभानी॥३॥
नहर बिना जहं कंवल फुलाने अबर बिना जहँ बरसै।
बेशऊर तंबूर सब बाजै चश्मा हो मन दरसै॥४॥
जिस दरगाह मुसल्ला बैठा डारै चादर क़ाज़ी।
चाय करै चीनी को बूझै सब को राखै राज़ी॥५॥
ऐसा हो जब कामिल कहिये जब कमाल पद पावै।
साहब मिल साहब हो दरसै ज्यौं जल बुन्द समावै॥६॥
जा केवल दीदार किये से नादिर होय फ़क़ीर।
मारै काल क़लन्दर कर गहि दरद लिये धरि धीर॥७॥
ऐसा हो जब पीर कहावै मान मनी सब खोवै।
चरनदास वह ज़मीन रौशन पायं पसारे सोवै॥८॥

नाम निरूपन

शब्द ४

॥ राग रामकली ॥

सतगुर अच्छर मोहिं पढ़ायो।
लेखनि* लिखा न स्याही सेती।
ना वह कागद मध्य चढ़ायो॥१॥

---

*क़लम

ना लग मात्र न माथे बन्दी अरुन* पीत महिं काला।
एंड़ा बेंड़ा टेढ़ा नाहीं ना वह आल जँजाला ॥२॥
ता कूं देख थकी सब करनी सब ही साधन भागे।
सिद्धैं भईं भोर के तारे मुक्ति न दीखै आगे ॥३॥
जा के पढ़े पढ़न सब छूटे आसा पोथी फारी।
मैं तो भया करम का हीना कहै सरसुती ठाढ़ी ॥४॥
गुरु सुकदेव पढ़ायो अच्छर अगम देस चटसाला†।
चरनदास जब पंडित हूए धारि तिलक अरु माला ।५।

शब्द ५

॥ राग धनाश्री ॥

अब मैं सतगुरु सरनै आयो ॥टेक॥
बिन रसना बिन अच्छर बानी ऐसो हि जाप सुनायो।१।
काम क्रोध मद पाप जराये त्रैबिधि पाप नसायो ॥२॥
नागिन पांच मुईं संग ममता दृष्टि सूं काल डेरायो ।३।
किरिया कर्म अचार भुलाना ना तीरथ मग धायो ॥४॥
समझो सहज बचन सुनि गुरु के भर्म को झोझ्‌क बगायो‡ ॥५॥
ज्यों ज्यों जमौं§ गरक‖ हों वामें वह मो माहिं समायो॥६॥
जग झूंठो झूंठो तन मेरो यों आपा नहिं पायो ।७।
वा कूं जपै जन्म सोइ जोतै सो मैं सुद्ध बतायो ।८।
चरनदास सुकदेव दया यों सागर लहरि समायो ।९।

---

* लाल। †पाठशाला, मकतब। ‡ बगदाया, छिटकाया।
§ ध्यान लगाऊं। ‖ डूब जाऊं।

॥ दोहा ॥

गगन मंडल में जाप कर, जित है दसवां द्वार ।
चरनदास यों कहत हैं, सो पहुंचै हरि वार ॥

—o—

मिश्रित

शब्द १

॥ राग भैरो ॥

गुरु बिन मेरे और न कोय ।
जग के नाते सब दिये खोय ॥ १ ॥
गुरु ही मात पिता अरु बीर ।
गुरु ही सम्पति जीव सरीर ॥ २ ॥
गुरु ही जाति बरन कुल गोत ।
जहां तहां गुरु संगी होत ॥ ३ ॥
गुरु ही तीरथ बर्त हमार ।
दीन्हे और धरम सब डार ॥ ४ ॥
गुरु ही नाम जपौं दिन रैन ।
गुरु कूं ध्यान परम सुख दैन ॥ ५ ॥
गुरु के चरन कमल कर बास ।
और न राखूं कोई आस ॥ ६ ॥
जो कुछ चाहैं गुरु ही करैं ।
भावै छांह धूप में धरैं ॥ ७ ॥

आदि पुरुष गुरु ही को जानूं ।
गुरु ही मुक्ती रूप पिछानूं ॥ ८ ॥
चरनदास के गुरु सुकदेव ।
और न दूजा लागै लेव* ॥ ९ ॥

शब्द २

॥ आरती राग भैरों ॥

मंगल आरति कीजै प्रात ।
सकल अविद्या घट गइ रात ॥ १ ॥
सूरज ज्ञान भयो उजियारा ।
मिटि गये औगुन कुबुधि विकारा ॥२॥
मन के रोग सोग सब नासे ।
सुमति नीर सुभ जलज† प्रकासे ॥३॥
भय अरु भर्म नहीं ठहराई ।
दुविधा गई एकता आई ॥ ४ ॥
जाति बरन कुल सूझै नीके ।
सब संदेह गये अब जी के ॥ ५ ॥
घट घट दरसै दीनदयाला ।
रोम रोम सब हो गइ माला ॥६॥
दृष्टि न आवैं दुख जग जाला ।
काग पलटि गति भये मराला‡ ॥७॥

* लेवा, कीचड़ । † कमल । ‡ हंस ।

अनहद बाजे बाजन लागे ।
चोर नगरिया तजि तजि भागे ॥८॥
गुरु सुकदेव की फिरी दोहाई ।
चरनदास अंतर लौ लाई ॥ ९ ॥

शब्द ३

॥ राग सोरठ ॥

यों कहैं हरि जी दया निधान, संत हमारे जीवन प्रान ।१।
संत चलैं जहं संग हिं जावं, संत दियो सो भोजन खावं ।२
संत सुलावैं जित रहुं सोय, संत बिना मेरे और न कोय।
संत हमारे माई बाप, संतहि को मन राखूं जाप ॥४॥
संतको ध्यान धरौं दिन रैन, संत बिना मोहिं परै न चैन ॥५॥
संत हमारी देही जान, संतहिं की राखूं पहिचान ॥६॥
संत को सकल बलैयां लेवं, संत कूं अपनो सर्बस देवं ७॥
संतहि हेत धरूं औतार, रच्छा कारन करूं न बार ॥८॥
सुख देऊं दुख सब निर्वार, चरनदास मेरो परिवार ।९।

शब्द ४

॥ राग सोरठ ॥

वह पुरुषोत्तम मेरा यार, नेह लगो टूटै नहिं तार ॥१॥
तीरथ जाउं न ब्रत करूं, चरन कमल को ध्यान धरूं ॥२॥
प्रानपियारे मेरे हिं पास, बन बन माहिं न फिरूं उदास ॥३॥
पढ़ूं न गीता वेद पुरान, एकहिं सुमिरूं श्री भगवान ।४।

औरन को नहिं नाऊं सीस, हरि ही हरि हैं बिस्वे बीसा।५।
काहू की नहिं राखूं आस, तृसना काटि दई है फांस ॥६॥
उद्यम करूं न राखूं दाम, सहजहिं ह्वै रहैं पूरन काम।७।
सिद्धिमुक्तिफलचाहौंनाहिं, नितहिं रहूंहरिसंतनमाहिं ८
गुरुसुकदेवयहीमोहिंदीन, चरनदासआनंदलवलीन ।९।

शब्द ५

॥ राग केदारा ॥

अरे मन करो ऐसा जाप ।
कटैं संकट कोटि तेरे मिटैं सगरे पाप ॥ १ ॥
चेत चेतन खोज करि लै देख आपा आप ।
काग सूं जब हंस होवै नाम के परताप ॥ २ ॥
ध्यान आतम सुरति राखौ छुटैं त्रैगुन ताप ।
सुरति माला सुमिरि हिरदय छांड़ु सकल संताप ॥३।
परा भक्ति अगाध अद्भुत बिमल अरु निष्काम ।
चरनदास सुकदेव कहिया बसै निजपुर धाम ॥४॥

शब्द ६

॥ राग बिलावल ॥

अब तू सुमिरन कर मन मेरे ।
अगले पिछले अब के कीये पाप कटैं सब तेरे ॥१॥
जम के दंड दहन पावक को चौरासी दुख प्रेरे ।
भर्म कर्म सबहीं कटि जैहैं जक्त व्याधि उरझेरे ॥२॥

पैहै भक्ति मुक्ति गति आनंद अमरहिं लोक बसेरो ।
जंनमै मरै न जोनी आवै या जग करै न फेरो ॥३॥
सुमिरनसाधनमाहिंसिरोमनिजोसुमिरन करि जानै ।
काम क्रोध मद पाप जरावै हरि बिन और न मानै ।४।
गुरु सुकदेव बताय दियो है बिन जिभ्या करि लीजै ।
चरनदास कहैं घेरि घेरि कर अर्ध उर्ध मन दीजै ॥५॥

शब्द ७

॥ राग नट व बिलावल ॥

जो नर हरि धन सूं चित लावै ।
जैसे तैसे टोटा नाहीं लाभ सवाया पावै ॥ १ ॥
मन करि कोठी नावं खजानो भक्ति दुकान लगावै ।
पूरा सतगुरु साभी करिकै संगति बनिज चलावै ॥२॥
हुंडी ध्यान सुरति ले पहुंचै प्रेम नगर के माहीं ।
सीधा साहूकारा सांचा हेर फेर कछु नाहीं ॥ ३ ॥
जित सौदागर सबही सुखिया गुरु सुकदेव बसाये ।
चरनहिंदास बिलमि रहे ह्वांइं जूनी* पंथ न आये ॥४॥

शब्द ८

॥ राग बिहागरा ॥

भइ हूं प्रेम में चूर हो मोहिं दरसन दीजै ।
हूं तो दासी तिहारी मोहन बेगि खबरिया लीजै ।१

*पुनर्जन्म ।

ज्ञान ध्यान अरु सुमिरन तेरो तुव चरनन चित राखूं ।
तेरोहि नाम जपूं दिन राती तुव बिन और न भाखूं ।२
तन व्याकुल जिय रूंधोहि आवत परी प्रीत गल फांसी ।
तुम तो निठुर कठोर महा पिय तुमको आवै हांसी ॥३॥
बिरह अगिन नख सिख सूं लागी मनै कल्पना भारी ।
गिरोहि* प्रीत तन संभ्रम† नाहीं रहत भवन में डारी।४॥
की विष खाय तजों यह काया की तुम्हरे संग रहसूं । ॥
चरनदास सुकदेव बिछोहा तेरी सौं‡ नहिं सहसूं§ ॥५

शब्द ९

॥ राग मंगल ॥

परम सखी सोइ साध जो आपा ना थपै ।
मन के दोष मिटाय नाम निर्गुन जपै ॥ १ ॥
पर निन्दा पर नारि द्रव्य नाहीं हरै ।
जिन चालन हरि दूर बीच अंतर परै ॥ २ ॥
छिन नहिं बिसरै राम ताहि निकटै तकै ।
हरि चरचा बिन और बाद नाहीं बकै ॥ ३ ॥
झूंठ कपट छल भगल ये सकल निवारिये ।
जत सत सील संतोष छिमा हिय धारिये ॥४॥
काम क्रोध मद लोभ बिडारन कीजिये ।
मोह ममता अभिमान अकस तजि दीजिये ॥५॥

* ग्रसी । † सम्हाल । ‡ क़सम । § सह सकता हूं ।

सब जीवन निर्बैर त्याग बैराग लै ।
तब निर्भय ह्वै संत भांति काहू न भै* ॥ ६ ॥
काग करम सब छोंड़ि होय हंसा गती ।
तृस्ना आस जलाय सोई साधू मती ॥ ७ ॥
जग सूं रहै उदास भोग चित ना धरै ।
जब रीझै करतार दास अपनो करै ॥ ८ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जो ऐसा हूजिये ।
चरनहिं दास बिचारि प्रेम में भीजिये ॥ ९ ॥

शब्द १०

॥ राग हिंडोला ॥

झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने ॥ टेक ॥
पौन उमाह उछाह धरती सोच सावन मास ।
लाज के जहं उड़त बगुले मोर हैं जग हांस ॥ १ ॥
हरष सोक दोउ खंभ रोपे सुरत डोरी लाय ।
विरह पटरी वैठि सजनी उमंग आवै जाय ॥ २ ॥
सकल विकल तहं देत झोके बिपत गावन हार ।
सखी बहुतक रंग राती रंगी पांचौ नार ॥ ३ ॥
नैन बादल उमंगि बरसैं दामिनी दमकात ।
बुद्धि को ठहराव नाहीं नेह की नहिं जात ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं कोइ बली झूलै सीस देत अकोर† ।
चरनदासा भये बौरे जाति बरन कुल छोर ॥ ५ ॥

* भय । † भेट, घूस ।

शब्द ११

॥ राग बिलावल ॥

सांचा सुमिरन कीजिये जा में मीन न मेख ।
ज्यों आगे साधुन किये बानी में देख ॥ १ ॥
टेक गहो दृढ़ भक्ति की नौधा हिय धारि ।
संतन की सेवा करो कुल कानि निवारि ॥ २ ॥
जा सूं प्रेमा ऊपजै जब हरि दरसायं ।
आगे पीछे ही फिरैं प्रभु छोड़ि न जायं ॥ ३ ॥
चारि मुक्ति बांदी भवै सिधि चरनन माहिं ।
तीरथ सब आसा करैं अघ देख नसाहिं ॥ ४ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जी चरनदास गुलाम ।
ऐसी साधन धारिये रहिये निस्काम ॥ ५ ॥

शब्द १२

॥ राग धनाश्री ॥

गुरु गम यहि बिधि जोग कमाये ।
आसन अचल मेर किये सीधे कसि बंध मूल लगाये १
संजम साधि कला बस कीन्ही मन पवन। घर आये।
नौ दरवाजे पट दै राखे अर्धं उर्ध मिलाये ॥२॥
नाभि तले पैड़ो करि पैठै सक्ति पताल गई है।
कांप्यौ सेस कमठ अकुलाये सायर थाह दई है॥३॥

उलटि चले मठ फोरि इकीसौ गये अभय पद माहीं।
अतिउंजियारोअद्भुतलीलाकहनसुननगमनाहीं।४।
जितभयेलीनसबैसुधिबिसरीछुटी।जगतकीब्याधा।
चरनदास सुकदेव दया सूं लागी सुन्न समाधा॥५॥

शब्द १३

॥ राग धनाश्री ॥

ऐसी जोग जुक्ति गति भारी।
मूलहिं बंध लगाय जुक्ति सूं मूंदि दई नव नारी॥१॥
आसन पद्म महा दृढ़ कीन्हो हिरदय चिबुक* लगाई।
चंद सूर दोउ सम करि राखे निरतिसुरतिघरआई॥२॥
ऊपर खैंचि अपान सहज में सहजै प्रान मिलाई।
पवन फिरी पच्छिम कूं दौरी मेरुहि मेरु चलाई॥३॥
ऐसहिं लोक अमर पद पहुंचे सूरज कोटि उजारी।
सेत सिंहासन सतगुरु परसे करि दरसन बलिहारी।४।
आपा बिसरि प्रेम सुख पायो उनमुन लागी तारो।
चरन दास सुकदेव दया सूं चरन दास छुटी बारी† ॥५॥

शब्द १४

॥ राग मलार ॥

बिथा मोरी जानत हो अकि‡ नाहीं।
नखसिखपावकबिरह लगाईबिछुरनदुख मनमाहीं।१।

---

* ठुड्डी। † चरन के दास का आवा गवन छूटा। ‡ याकि।

दिननहिंचैननींदनहिंनिसकूं नस्चलबुधिनहिंमेरो।
कासूं कहूं कोउ हितु न हमारो लग्न लहरि हरि तेरी॥२॥
तन भयो छीन दीन भये नैना अजहूं सुधि नहिं पाई।
छतियां दरकत करक हिये में प्रीत महा दुखदाई।३।
जलबिनमीनपियाबिनबिरहिन इन धीरजकहुकैसी।
पच्छी जरै दव* लागी बन में मेरी गति भइ ऐसी।४।
तलफत हूं जिय निकसत नाहीं तन में अति अकुलाई।
चरनदास सुकदेव हि बिनवै† दरसन द्यो सुखदाई।५।

शब्द १५

॥ राग सोठना ॥

पर आसा है दुखदाई ॥ टेक ॥
जिन धीरज सो पति रसिया छांड़ो,
बांको मोह यार कियो गाढ़ो।
क्रोध सूं प्रीति लगाई ॥ १ ॥
जिन जत सत देवर सूं मुख मोड़ा।
दया बहिन सूं नाता तोड़ा।
सुमति सौच‡ बिसराई ॥ २ ॥
जो धर्म पिता के घर सूं छूटी।
छिमा माय सूं यों हीं रूठी।
कुमति परोसिन पाई ॥ ३ ॥

* आग। † बिनती करता है। ‡ सफ़ाई।

संतोष चचा को कहा न माना ।
चची दीनता सूं रिसि ठाना ।
माया मद बौराई ॥ ४ ॥
चरनदास जब निज पति पावै ।
श्री सुकदेव सरन सो आवै ।
सील सिंगार बनाई ॥ ५ ॥

शब्द १६

॥ राग बिलाव ५ ॥

करनी की गति और है कथनी की औरे ।
बिन करनी कथनी कथैं बक बादी बौरे ॥ १ ॥
करनी बिन कथनी इसी* ज्यों ससि बिन रजनी ।
बिन सस्तर† ज्यों सूरमा भूषन बिन सजनी‡ ॥२॥
ज्यों पंडित कथि कथि भले बैराग सुनावै ।
आप कुटुंब के फँद पड़े नाहीं सुरझावैं ॥ ३ ॥
बांझ झुलावै पालना बालक नहिं माहीं ।
वस्तु बिहीना जानिये जहं करनी नाहीं ॥ ४ ॥
बहु डिंभी करनी बिना कथि कथि करि मूए ।
संतों कथि करनी करी हरि के सम हूए ॥ ५ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जी चरनदास बिचारौ ।
करनी रहनी दृढ़ गहौ थोथी कथनी डारौ ॥ ६ ॥

*ऐसी । †हथियार । ‡स्त्री ।

शब्द १७

॥ राग बिलावल ॥

माला फेरे कहा भयो ॥ टेक ॥

अंतर के मन को नहिं फेरा पाप करत सब जन्म गयो ।१।

परनिन्दापरनारिनभूलोखोटकपटकीओर नयो* ।।२।।

काम क्रोध मद लोभ न खोये ह्वै रह्यो मूरख मोह मयो ।३।

दुनियासांचसमझघरकीन्होधनजोरनकोपरनलयो ४

दयाधर्मदोउमारगछांडेमंगतनकोनहिंदानदयो ।।५।।

गुरु सूं झूंठ भगल साधन सूं हरि सूं नाहीं नेह जयो† ।६।

चरनदास सुकदेव कहत हैं कैसे कहियो मुक्ति हयो‡ ।७।

शब्द १८

॥ राग सोरठ ॥

अवधू ऐसी मदिरा पीजे ।

बैठि गुफा में यह जग बिसरै चंद सूर सम कीजै ।१।

जहां कुलाल चढ़ाई भाठी ब्रह्म ज्वाल परजारी ।

भरि भरि प्याला देत कुलाली बाढ़ै भक्ति खुमारी ।२।

माता§ ह्वै करि ज्ञान खड़ग लै काम क्रोध कूं मारै ।

घूमत रहै गहै मन चंचल दुविधा सकल बिडारै ।३।

जो चाखै यह प्रेम सुधारस निज पुर पहुंचै सोई ।

अमर होय अमरा पद पावै आवा गवन न होई ।४।

---

*झुका । †जाना । ‡होगी । §मस्त ।

गुरु सुकदेव किया मतवारा तीन लोक तृन बूझा।
चरनदास रनजीत भये जब आनंद आनंद सूझा ॥५॥

शब्द १९

॥ राग बिहागरा ॥

साधो निंदक मित्र हमारा।
निंदक कूं निकटे ही राखौं होन न देउँ नियारा ॥१॥
पाछे निंदा करि अघ धोवै सुनि मन मिटै बिकारा।
जैसे सोना तापि अगिन में निरमल करै सोनारा ॥२॥
घन अहरन कसि* हीरा निवटै† कीमत लच्छ हजारा।
ऐसे जांचत दुष्ट संत कूं करन जगत उजियारा ॥३॥
जोग जज्ञ जप पाप कटन हितु करै सकल संसारा।
बिन करनी मम कर्म कठिन सब मेटै निंदक प्यारा।४।
सुखी रहो निंदक जग माहीं रोग न हो तन सारा।
हमरी निंदा करने वाला उतरै भव निधि पारा ॥५॥
निंदक के चरनों की अस्तुति भाखौं बारम्बारा।
चरनदास कहैं सुनियो साधो निंदक साधक भारा।६।

शब्द २०

॥ राग सोरठा ॥

साधो होनहार की बात।
होत सोई जो होनहार है का पै मेटी जात ॥१॥
कोटि सयानप बहु विधि कीन्हे बहुल तर्क कुसलात।
होनहार ने उलटी कीन्ही जल में आग लगात ॥२॥

*पीट करके। † निर्मल होय।

जो कुछ होय होलबता* भोंड़ी जैसी उपजै बुद्धि।
होनहार हिरदै मुख बोलै बिसरि जाय सब शुद्धि।३।
गुरु सुकदेव दया सूं होनी धारि लई मन माहिं।
चरनदास सोचे दुख उपजै समझे सूं दुख जाहिं ॥४।

शब्द २१

॥ राग परज ॥

जिन्है हरि भक्ति पियारी हो।
मात पिता सहजै छुटैं छुटैं सुत अरु नारी हो।१।
लोक भोग फीके लगैं सम अस्तुति गारी हो।
हानि लाभ नहिं चाहिये सब आसा हारी हो।२।
जग सूं मुख मोरे रहैं करैं ध्यान मुरारी हो।
जित मनुवां लागो रहै भइ घट उंजियारी हो ॥३॥
गुरु सुकदेव बताइया प्रेमी गति भारी हो।
चरनदास चारौ बेद सूं औरै कछु न्यारी हो ॥४।

शब्द २२

॥ राग परज ॥

गुरु हमरे प्रेम पियायो हो।
ता दिन तें पलटो भयो कुल गोत नसायो हो ॥१॥
अमल चढ़ो गगनै लगो अनहद मन छायो हो।
तेज पुंज की सेज पै प्रीतम गल लायो हो॥ २ ॥

---

*होनहार ।

गये दिवाने देसड़े आनंद दरसायो हो ।
सब किरिया सहजै छुटी तप नेम भुलायो हो ॥३॥
त्रैगुन तें ऊपर रहूं सुकदेव बसायो हो ।
चरनदास दिन रैन नहिं तुरिया पद पायो हो ॥४॥

शब्द २३

॥ राग सोरठ ॥

भाई रे समझ जग ब्योहार ।
जब ताईं तेरे धन पराक्रम करैं सबहीं प्यार ॥ १ ॥
अपने सुख कूं सबहिं चाहैं मित्र सुत अरु नार ।
इन्हीं तौ अप* बस कियो है मोह बेड़ी डारि ॥ २ ॥
सबन तो कूं भय दिखायो लाज लकुटी† मार ।
बाजीगर के बांदरा ज्यों फिरत घर घर द्वार ॥३॥
जबै तो कूं बिपति आवै जरा कोर बिकार ।
तबै तो सूं लाज मानैं करैं ना तेरि सार ॥ ४ ॥
इनकी संगति सदा दुख है समझ मूढ़ गंवार ।
हरि प्रीतम कूं सुमिरि ले कहैं चरनदास पुकार ॥५॥

शब्द २४

॥ राग बिहागरा ॥

ये सब निज स्वारथ के गरजी ।
जग में हेत न कर काहू सूं अपने मन को बरजी‡ ॥१॥

---

* अपने । † लाठी ‡ मना करना ।

रोपैं फंद घात बहु डारैं इन तें रहु डरता जी ।
हिरदे कपट बाहर मिठ बोलैं यह छल हैगो कहा जी ।२।
दुख सुख दर्द दया नहिं बूझैं इनसे छुटावो हरि जी ।
सौगँद खाय झूठ बहु बोलैं भौसागर कस तरि जी ।३।
वैरी मित्र सबै चुनि देखे दिल के महरम* कहँ जी ।
इन को दोष कहा कहा दीजै यह कलजुग की झर जी ।४।
दुनियाभगलकुटिलबहुखोंटी देखि छातीमेरीलरजी† ।
चरनदास इन कूं तजि दीजै चल बस अपने घर जी ॥५॥

शब्द २५

॥ राग आसावरी ॥

साधो राम भजे ते सुखिया ।
राजा परजा नेमो दाता सबहीं देखे दुखिया ॥ १ ॥
जो कोई धनवंत जगत में राखत लाख हजारा ।
उनकूं तौ संसय है निस दिन घटत बढ़त ब्यौहारा ॥२॥
जिनके बहु सुत नाती कहिये और कुटुंब परिवारा ।
वे तौ जीवन मरन के काजै भरत रहैं दुख भारा ॥३॥
नेमी नेम करत दुख पावैं कर अस्नान सबेरा ।
दाता कूं देबे का दुख है जब मंगतौं ने घेरा ॥४॥
चारि बरन में कोउ न देखा जाकूं चिंता नाहीं ।
हरि कीभक्ति बिना सब दुख है समझ देख मन माहीं ५

* भेदी । † कांपी ।

सत संगति अरु हरिसुमिरनकरिसुकदेवागुरुकहिया ।
चरनदासविपतासबतजिकैआनँदमेंनितरहिया ।३।

शब्द २६

॥ राग सोरठ ॥

अब घर पाया हो मोहन प्यारा ॥ टेक ॥
लखोअचानकअज*अबिनासीउघरिगयेदृगतारा।१।
झूमि रह्यो मेरे आंगन में टरत नहीं कहुं टारा।१।
रोम रोम हिय माहीं देखो होत नहीं छिन न्यारा ॥३॥
भयोअचरजचरनदासनपैयेखोजकियोबहुबारा ॥४॥

शब्द २७

॥ राग आसावरी ॥

हे मन आतम पूजा कीजै ।
जितनी पूजा जग के माहीं सबहुन को फल लीजै॥१॥
जो जो देहीं ठाकुरद्वारे तिन में आप बिराजै ।
देवल में देवत है परगट आछी बिधि सूं राजै।।२॥
त्रैगुन भवन संभारि पूजिये अनरस होन न पावै ।
जैसे कूं तैसा ही परसै प्रेम अधिक उपजावै ॥३॥
और देवता दृष्टि न आवै धोखे कूं सिर नावै ।
आदि सनातन रूपसदा हीं मूरख ताहि न ध्यावै ।४।

---

*अजर ।

घट घट सूझै कोइ इक बूझै गुरु सुकदेव बतावैं ।
चरनदास यह सेवन कीन्हे जिवन मुक्ति फल पावैं ॥५॥

शब्द २८

॥ राग हेली ॥

समझि संभारो रामजी हेली और न मीता कोय ।
जीवत की रच्छा करैं मुए मुक्ति करैं तोय ॥१॥
अरु सब स्वारथ के सगे री हेली अंत न कोई साथ ।
सुख में सब ही रल मिलें दुख में सुनें न बात ॥२॥
छल करि मन की बूझ लें री हेली पाछे डारें घात ।
तिन कूं तू अपनो कहै सो दोषी ह्वै जात ॥३॥
भेद न अपनो दीजिये री हेली कोऊ कैसो होय ।
दयहिर की हिरदय रहै हरि ही जानै सोय ॥४॥
कै गुरु अपनो जानिये री हेली कै सत संगति बास ।
गुरु सुकदेव बतावई देख चरन हीं दास ॥ ५ ॥

शब्द २९

॥ राग बिलावल ॥

अरे नर जन्म पदारथ खोया रे ॥टेक ॥
बीतीअवधिकालजबआयासीसपकरिकैरोयारे ।१।
अबक्याहोयकहाबनिआवैमाहिंअबिद्यासोयारे ॥२॥
साधुसंगगुरुसेवन चीन्हीतत्वज्ञाननहिंजोया* रे ।३।

* ढूंढ़ा ।

आगे से हरि भक्ति न कीन्ही रसना राम न जोया रे ॥४॥
चौरासी जम दंड न छूटै आवा गवन का दोया* रे ॥५॥
जोकुछकियासोई अबपावोवहोलनौ† जो बोया रे ॥६॥
साहब सांचा न्याव चुकावै ज्यों का त्यो ही होया रे ॥७॥
कहूं पुकारे सब सुनि लीजो चेति जाव नर लोया रे ॥८॥
कहैं सुकदेव चरन हीं दासा यह मैदान यह गोया‡ रे ९

शब्द ३०

॥ राग आसावरी ॥

जब सूं मन चंचल घर आया ।
निर्मल भया मैल गये सगरे तीरथ ध्यान जो न्हाया १
निर्बासी ह्वै आनंद पाये या जग सूं मुख मोड़ा ।
पांचौ भई सहज बस मेरे जब इनका रस छोड़ा ।२।
भय सब छूटे अब को लुटै दूजी आस न कोई ।
सिमिटिसिमिटिरहाअपनेमाहींसकलबिकलनहिंहोई
निज मन हूआ मिटि गा दूआ को बैरी को मीता ।
बंध मुक्ति का संसय नाहीं जन्म मरन की चीता§ ॥४॥
गुरु सुकदेव भेव मोहिं दीनो जब सूं यह गति साधी ।
चरनदास सूं ठाकुर हूए लुटि‖ गये बाद बिबादो ५

* दोड़ारी, डोरा । † काटो । ‡ गेंद । § चिन्ता । ‖ लुट गये ।

शब्द ३१

॥ राग बिहागरा व बिलावल ॥

अब हम ज्ञान गुरू से पाया ।
दुबिधा खोय एकता दरसी निश्चल ह्वै घर आया ॥१॥
हिरदा सुद्ध हुवा बुधि निर्मल चाह रही नहिं कोई ।
ना कुछ सुनूं न परसूं बूझूं उलटि पलटि सब खोई ॥२॥
समझ भई जब आनंद पाये आतम आतम सूझा ।
सूधा भया सकल मन मेरा नेक न कहूं अरूझा ॥३॥
मैं सबहुन में सब मोहूं में सांच यही करि जाना ।
यही वही है वही यही है दूजा भाव मिटाना ॥४॥
सुकदेवा ने सब सुख दीन्हे तिरपत होय अघायो ।
चरनदास निकसा नहिं रंचक परमातम दरसायो* ॥५॥

शब्द ३२

॥ राग मंगल व बिलावल ॥

कर्म करि निष्कर्म होवै, फेरि कर्म न कीजिये ।
भूलि कै कोइ कर्म साधै, उलटि कर्म न दीजिये ॥१॥
कर्म त्यागै जगै आतम, यह निश्चय करि जानिये ।
जब अभय पद सुलभ पावै, साँच हिय में आनिये ॥२॥
साँच हिय में राखि अवधू, नाम निर्गुन नित जपौ ।
अगिन इन्द्री कर्म लकड़ी, पंच अग्नी अस तपौ ॥३॥

---

* चरनदास का आपा नहीं रहा बरन परमात्मा में अभेद हो गया ।

जैसे टूट गहनो खोज मेटै, होय सोना अति सुखी ।
ऐसे जोग भक्ति बैराग खेती, कर्म काटै गुरुमुखी ॥४॥
जासूं मिटै आपा आप सहजै, ब्रह्म बिद्या ठानिये ।
गुरु सुकदेवा जुक्ति भाखैं, चरनदास पिछानिये ॥५॥

शब्द ३३

॥ राग आसावरी ॥

हम तो आतम पूजा धारी
समझिसमझिकरनिस्चयकीन्ही,औरसबनपरभारी ।१।
और देवल जहँ धुंधली पूजा, देवत दृष्टि न आवै ।
हमरा देवत परगट दीखै, बोलै चालै खावै ॥ २ ॥
जित देखौं तित ठाकुरद्वारे, करों जहाँ नित सेवा ।
पूजा की बिधि नीके जानौं, जासूं परसन देवा ॥३॥
करि सन्मान असूनान कराऊँ, चन्दन नेह लगाऊँ ।
मीठे बचन पुष्प सोइ जानो ह्वै करि दीन चढ़ाऊँ ॥४॥
परसन करि करि दरसन पाऊँ, बार बार बलि जाऊँ ।
चरनदास सुकदेव बतावैं, आठ पहर सुख पाऊँ ॥५॥

शब्द ३४

॥ राग सोठना ॥

तेरी छिन छिन छीजत आयु, समझ अजहूं भाई ॥१॥
दिन दो का जीवन जानि, छांड़ दे गुमराई* ॥२॥

* गुमराही, भूल भटक ।

सुन मूरख नर अज्ञान, चेत करु कोउ न रही ॥३॥
कह फूला फिरत गंवार, जगत झूंठे माहीं ॥ ४ ॥
कियौ काम क्रोध सूं नेह, गही है अकड़ाई ॥ ५ ॥
मतवारा माया माहिं, करत है कुटिलाई ॥ ६ ॥
तेरो संगी कोई नाहिं, गहै जब जम बाहीं ॥ ७ ॥
सुकदेव चितावैं तोहिं, त्याग रे मचलाई ॥ ८ ॥
चरनदास कहैं भजु राम, यही है सुखदाई ॥ ९ ॥

शब्द ३५

॥ सवैया ॥

आदिहुं आनंद, अन्तहुं आनंद,
मध्यहुं आनंद, ऐसे हिं जानौ ।
बंधहुं आनंद, मुक्तिहुं आनंद,
आनंद ज्ञान, अज्ञान पिछानौ ॥
लेटेहुं आनंद, बैठेहुं आनंद,
डोलत आनंद, आनंद आनौ ।
चरनदास बिचारि, सबै कुछ आनंद,
आनंद छांड़ि कै, दुक्ख न ठानौ ॥

शब्द ३६

कवित्त

मंदिर क्यों त्यागै अरु भागै क्यों गिरिवर कूं,
हरि जी कूं दूर जानि कल्पै क्यों बावरे ।
सब साधन बतायो अरु चारि बेद गायौ,
आपन कूं आप देखि अन्तर लौ लाव रे ॥
ब्रह्म ज्ञान हिये धरौ बोलते कौ खोज करौ,
माया अज्ञान हरौ, आपा बिसराव रे ।
जैहैं जब आप धाप कहा पुन्न कहा पाप,
कहैं चरनदास तू निस्चल घर आव रे ॥

शब्द ३७

॥ भोर की धुन राग भैरव ॥

आरति रमता राम की कीजै ।
अंतर्ध्यान निरखि सुख लीजै ॥१॥
चेतन चौकी सत कूं आसन ।
मगन रूप तकिया धरि दीजै ॥२॥
सोहं थाल खैंचि मन धरिया ।
सुरत निरत दोउ बाती बरिया ॥३॥
जोग जुगति सूं आरति साजी ।
अनहद घंट आप सूँ बाजी ॥४॥

सुमति सांझ की बेरिया आई।
पांच पचीस मिलि आरति गाई ॥ ५ ॥
चरनदास सुकदेव कूं चेरो।
घट घट दरसै साहब मेरो ॥ ६ ॥

शब्द ३८

॥ भोर की धुन राग भैरव ॥

गगन मंडल में आरति कीजै।
उत्तम साज सकल साजि लीजै ॥ १ ॥
सुखमन अमृत कुंभ* धरावै।
मनसा मालिनि फूल चढ़ावै ॥ २ ॥
घीव अखंडा सोहं बाती।
त्रिकुटी ज्योति जलै दिन राती ॥ ३ ॥
पवन साधना थाल करीजै।
ता में चौमुख मन धरि लीजै ॥४॥
रवि ससि हाथ गहौ तिहि माहीं।
खिन दहिने खिन बांये लाई ॥५॥
सहस कंवल सिंहासन राजै।
अनहद झांझरि नित हीं बाजै ॥६॥
यहि बिधि आरति सांची सेवा।
परम पुरुष देवन को देवा ॥ ७ ॥
चरनदास सुकदेव बतावै।
ऐसी आरति पार लगावै ॥ ८ ॥

* घड़ा

शब्द ३९

॥ राग काफी ॥

कोइ दिन जीवै तौ कर गुजरान।
कहर गरूरी छांड़ि दिवाने, तजो अकस की बान।१।
चुगली चोरी अरु निन्दा लै, झूठ कपट अरु कान।
इनकूं डारि* गहे जत सत कूं, सोई अधिक सयान।२।
हरिहरिसुमिरौछिननहिंबिसरौ,गुरुसेवामनठानि।
साधुन की संगति कर निस दिन, आवै ना कछुहानि।३।
मुड़ौ कुमारग चलौ सुमारग, पावौ निज पुर बास।
गुरु सुकदेव चेतावैं तोकूं,समुझ चरनहीं दास ॥४॥

शब्द ४०

॥ राग रामकली ॥

फिरि फिरि मूरख जन्म गंवायो।
हरिकोभक्तिसाधुकीसंगति,गुरुकेचरननमेंनहिंआयो१
धन के जोरन को दृढ़ कीन्हो, महल करनब्रतधारो।
टेकपकड़करिनारी सेई,सिरपरबोझलियोअतिभारो ३
ह्वै हैं दुख नाना बिधि केरो, तन मन रोग बढ़ायो।
जीवतमरतनहींसुखपैहौ,आवागवनकूंबोज जगायो ४
भरमि भरमि चौरासी आयो, मनुषा देहो पाई।
यातनकीकछुसारनजानी,फिरआगेचौरासीआई ।५।

---

* फेंक कर।

आंख उघारि समुझ मन माहीं, हिरदय करौ बिचारा।
ऐसाजन्मबहुरिकबपैहौ, बिरथाखोवौजगव्यौहारा ॥६॥
जानौगे जग छांड़ि चलौगे, कोई न संग तुम्हारे।
चरनदास सुकदेव कहतहैं, यादकरौगेबचन हमारे ॥७॥

शब्द ४१

॥ राग कान्हरा ॥

हरि बिन कौन तुम्हारो मीता।
कुटुंब संघाती स्वारथ लागे, तेरी काहू कूं नहिं चीता १
तैं प्रभु ओरी सूं मुख मोड़ा, झूंठे लोगन सूं हित कीता।
अरुतैंअपनीआंखौंदेखा, कईबारदुखसुखहोबीता ॥२॥
सम्पति में सबहीं घिरि आवैं, बिपति परे अधिको दुख दीता।
मूठी बांधि जनम नर लाये, हाथपसारिचलैगोरीता ३
धरिस्वांगफिरैतिनकारन, कपिज्यौंनाचततालाथीता
मुएनसंगीहोहिं तिहारे, बांधिजलावैं देहपलीता ॥४॥
गुरुसेवासतसंगनकीन्हीं, कनककामिनीसोंकरिप्रीता।
चरनदाससुकदेवकहतहैं, मरतमरतहरिनामनलीता ५

शब्द ४२

॥ राग सोरठ ॥

कछु मन तुम सुधि राखौ वा दिन की।
जा दिन तेरी देह छुटैगी, ठौर बसौगे बन की ॥१॥

जिन के संग बहुत सुख कीन्हे, मुख ढकि ह्वैहैं न्यारे।
जम को त्रास होय बहु भांती, कौन छुटावनहारे ॥२॥
देहरी लौं तेरी नारि चलैगी, बड़ी पौरि लौं माई।
मरघट लौं सब बीर भतीजे, हंस अकेला जाई ॥३॥
द्रव्य गड़े अरु महल खड़े ही, पूत रहैं घर माहीं।
जिन के काज पचे दिन राती, सो सँग चालत नाहीं॥४॥
देव पितर तेरे काम न आवैं, जिन की सेवा लावै।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, हरि बिन मुक्ति न पावै ।५।

शब्द ४३

॥ राग हेली ॥

जग को आवन जान, हेली या को सोक न कीजे ॥
यह संसार असार है, हेली हरि सूं करि पहिचान ॥२॥
कुटंब संग आयो नहीं, हेली ना कोइ संग को जाय।
ह्यांई मिलैं हियांई बीछुरैं, ता को झुरै बलाय॥१॥
महल द्रव्य किस काम के, हेली चलैं न काहू साथ।
राम तजे इन सों पगे, हारो अपने हाथ ॥ २ ॥
जीवत काया धोवते, हेली तिल फुलेल लगाय।
मजलिस करि कै बैठते, मूए काग न खाय ॥३॥
लाभ भये हरषै नहीं, हेली हानि भये दुख नाहिं।
ज्ञानी जन वहि जानिये, सब पुरुषन के माहिं ।।४।।
गुरु सुकदेव चितावई, हेली चरनदास हिय राखि।
मनुष जन्म दुर्लभ मिले, वेद कहत हैं साखि ॥५॥

शब्द ४४

॥ राग हेली ॥

हरि पाये फल देख, हेली पावत ही खोई गई ।
जातअटककुलखोयगये, हेलीखोयेवरन अरुभेस ॥टेक॥
जन्म मरन सब खो गये, हेली बंध मुक्ति गये खोय ।
ज्ञान अज्ञान न पाइये, नेम धर्म नहिं होय ॥१॥
लाजगईअरुभयगये, हेली साथहिं गई उपाध ।
आसा अरु करनी गई, खोये बाद बिबाद ॥ २ ॥
मैं नाहीं हरि ही रहे, तू दौरत हरि ओट ।
पावैगी जब जानि है, हरि पावन की खोट* ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव सुनाइया, हेली चरनदास मन सोच ।
सब बातन सों जायगी, रहै न तेरो खोज ॥ ४ ॥

शब्द ४५

॥ राग होली ॥

अचरज अलख अपार, हेली वा की गति नहीं पाइये ।
बहु निषेध जो पै करै, हेली तौ जावैगा हार ॥टेक॥
बानी थकि बुधिहूंथकै, हेलीअनुभयथकिथकिजाय ।
ब्रह्मादिक सनकादि हूं, नारद थकि गुन गाय ॥१॥

---

* 'खोट' के मानी 'ख़राबी' के हैं—यह लफ़ज़ ताना के तौर पर इस्तेमाल किया गया है यानी हरि जब मिलेंगे तब मज़ा मालूम होगा कि कुछ बाक़ी न रहैगा ।

वेद थके अरु ब्यास हूं, हेली ज्ञानी थके अरु ज्ञान।
संकर से जोगी थके, करि करि निर्मल ध्यान ॥ २ ॥
बहुतक कथि कथि हीं गये, हेली नेक न लिपटी बुद्ध।
वाचक ज्ञानी कहत हैं, हमने पायो सुद्ध ॥ ३ ॥
पांचो ईन्द्रिन सूं लखै, हेली ताकूं सांचि न मानि।
जो जो इन सूं देखिये, तिनकी निस्चय हानि ॥४॥
गुरु सुकदेव सुनावई, हेली समझ चरन हीं दास।
अपने ही परकास में, आप रहा परकास ॥५॥

शब्द ४६

॥ राग काफी ॥

इन नैनन निराकार लहा।

कहनसुननकीकौन पतीजै, जान अजान हू सहज रहा १
जितदेखौतितअलखनिरंजन, अमरअडोलअबोलमहा।
जोति जगत बिच झिलमिल झलकै, अगम अगोचर पूरि रहा ॥२॥
अलख लखा जब बेगम हूआ, भर्मकोट जब तुर्त ढहा।
सर्व मई सब ऊपर राजै, सुन्न सरूपी ठोस ठहा ।३।
जीवन मुक्त भया मन मेरा, निर्भय निर्गुन ज्ञान महा।
गुरु सुकदेव करी जब किरपा, चरनदास सुख सिंध बहा ४

शब्द ४७

॥ राग बिहागरा ॥

अरे नर हरि का हेत न जाना ।
उपजाया सुमिरन के काजे, तैं कछु औरै ठाना ।१॥
गर्भ माहिं जिन रच्छा कीन्ही, ह्वां खाने कूं दीन्हा ।
जठर अगिन सों राखि लियो है,अँग संपूरनकीन्हा२
बाहर आयबहुत सुधि लीन्ही, दसन* बिनापयप्यायो।
दांतभयेभोजन बहु भांती,हितसों तोहिं खिलायो३॥
और दिये सुख नाना बिधि के, समुझिदेखुमनमाहीं
भूलो फिरत महा गर्बायो, तू कछु जानत नाहीं ॥४॥
तुवकारन सब कछु प्रभु कीन्हो,तूकीन्हानिजकाजा।
जगब्यौहार पगो हीं बोलै,तोहिं न आवै लाजा ॥५॥
अजहूं चेत उलट हरि सौंहीं† जन्म सुफल करु भाई।
चरनदास सुकदेव कहैं यों, सुमिरन है सुखदाई ॥६॥

शब्द ४८

। राग सारंग ॥

दुनिया मगन भये धन धाम ।
लालच मोह कुटुंब के पागे, बिसरि गये हरि नाम ॥१॥
एक घरी छुटकारो नाहीं, बँधि रहे आठौ जाम ।
पांच पहर धंधे में माते, तीन पहर सँग बाम‡ ॥२॥

---

* दशन = दांत। † ओर, तरफ़। ‡ स्त्री।

फूले फिरत महा गर्बाये, पवन भरे ये चाम ।
दीप कलसज्यों बिनसिजायगो,यातनकोयहिकाम॥३॥
साधु संग गुरु सेव न कीन्ही, सुमिरे ना श्री राम ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, कैसे पावो ठाम ॥ ४ ॥

शब्द ४९

॥ राग काफ़ी ॥

चला आवै चलावे* का दोस,† कछु करिले भाई ॥टेक॥
ह्यांसे चलना होय अचानक, फिरपाछेरहैअफसोस ।१।
पी के विषय मदिरा मतवारा, होय रहा बेहोस ॥२॥
बाट में सूल बबूल घने, अरु जाना है कइ कोस ।३।
दम ही दम ही दम छीजत है, पल पल घटै तन जोस‡ ॥४॥
माया मोह कुटुंब सुख ऐसे, जैसे दीखै मोती ओस ५।
सुकदेवदियोकिरपाकरि कै,राम रस काप्याला नोस§ ।६।
चरनदास कहैं यह बात भली, सुनि लीजै दोनों गोस‖ ७

शब्द ५०

राग सोरठ व सारंग ॥

पांचन मोहिँ लियो बिलमा¶ ।
नासा तुचा और सरवनिया, नैनन अरु रसना ॥१॥

*चाला, कूच । †दिवस = दिन । ‡बल । §पो । ‖गोश = कान ।
¶ रिझाय लिया ।

एक एक ने बारी बाँधी, गहि गहि लै लै जाहिँ ।
निसि दिन उनहीं के रस पागो, घर में ठहरत नाहिँ ॥२॥
अलि* पतंग गजमीन मृगाज्यौं, ह्वै रह्यौ पर आधीन ।
अपनो आप सँभारत नाहीं, बिषय बासना लीन ॥३॥
ह्वै कुलवंती टोना सीखो, अनहद सुरति धरौं ।
गगन मंडल में उलटा कूवाँ, तासों नीर भरौं ॥४॥
भँवर गुफा में दीपक बारौं मंतर एक पढ़ौं ।
काम क्रोध मद लोभ होम करिलालन† चित्त हरौं ॥५॥
जतन जतन करि पीव छुटाओं, फिर नहिं जानन दों ।
चरनदास सुकदेव बतावैं, निज मनहीं कर लों ॥६॥

॥ करनी ॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

अरज करै कर जोरि कै, यह चरनन को दास ।
ए हो श्री सुकदेव जी, कछु पूंछन की आस ॥१॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

पूंछो मन कूं खोल करि, मेटौं सब संदेह ।
अरु तुम्हरे हिरदय बिषै, सदा हमारो ग्रेह ॥ २ ॥

---

* भंवरा । † प्रीतम ।

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

मैं तौ चरनहिं दास हौं, तुम तौ परम दयाल ।
एकन पग पनहीं नहीं, एक चढ़ैं सुख पाल ॥३॥
यही जो मोहिं बताइये, एक मुक्ति को जाहिं ।
एक नरक को जाय करि, मार जमों की खाहिं ॥४॥
एक दुखी इक अति सुखी, एक भूप इक रंक ।
एकन को बिद्या बड़ी, एक पढ़े नहिं अंक ॥५॥
एकन को मेवा मिलै, एक चने भी नाहिं ।
कारन कौन दिखाइये, करि चरनन की छांहिं ।६।
यही मोहिं समझाइये, मन का धोखा जाय ।
ह्वै करि निस्संदेह मैं, रहों चरन लिपटाय ॥७॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

जिन जैसी करनी करी, तैसे ही फल पाय ।
भुगतत हैं वै जगत में, ता कूं बदला पाय ॥ ८॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

चरनदास यों कहत हैं, सुनो गुरू सुकदेव ।
ज्यों करि होवहिं कर्म हूं, ता कूं कहिये भेव ॥९॥

॥ गुरु बचन ॥

॥ चौपाई ॥

कहि सुकदेव संदेह मिटाऊं,
ज्यों की त्यों पूरी समझाऊं ॥
खोटी करनी नरक हिं जावै ।
पाप छीन मृत लोक हिं आवै ॥
भले कर्म जा स्वर्ग मंझारा ।
पुन्न छीन मृत लोक हिं डारा ॥
ऐसे लोक लोक फिरि आवै ।
कर्म न छूटै दुख सुख पावै ॥
जैसे कर्म छुटै सो कहूं ।
तो पै दया करत हीं रहूं ॥
खोंटे कर्म सु सकल निवारै ।
सुभ करनी कूं नीके धारै ॥
जा के फल कूं मन नहिं लावै ।
ह्वै निष्कर्म परम सुख पावै ॥
फल त्यागै सोइ चरनहिं दासा ।
चरन कमल की राखै आसा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सो पावै निर्बान पद, आवा गवन मिटाय ।
जनम मरन होवै नहीं, फिरि फिरि काल न खाय॥११॥

॥ शिष्य बचन ॥

॥ दोहा ॥

जो जो कहि गुरु देव जी, सो सो परी प्रतच्छ ।
चरनदास कूं दीजिये, साध होन की सिच्छ ॥१२॥

॥ गुरु बचन ॥

॥ दोहा ॥

वही साधवी जानिये, निरवारै सब कर्म ।
तन मन बचन सधे रहैं, पालै अपना धर्म ॥ १३ ॥
पहिले साधै बचन कूं, दूजे साधै देह ।
तीजे मन कूं साधिये, उर सूं राखै नेह ॥ १४ ॥
जिन हीं के उपदेस कूं, राखै अपनो चित्त ।
ता कूं मनन सदा करै, भूलै नहिं नित प्रित्त ॥१५॥

॥ शिष्य बचन ॥

॥ दोहा ॥

जो जो कही सो जानिया, ए हो स्री सुकदेव ।
साधन तन मन बचन कूं, सब हीं कहिये भेव ॥१६॥

॥ गुरु बचन ॥

॥ दोहा ॥

सिष्य सो तो सों कहत हौं, नीके सुन दै कान ।
ज्यों ज्यों कर्म बचैं दसौ, ता की करि पहिचान॥१७॥

॥ बचन के कर्मों का निर्णय ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम बचन के चार सुनाऊं ।
तेरे चित में नीके लाऊं ॥
एक यही जो झूठ न बोलै ।
सांच कहै तब हिरदय तोलै ॥
झूठ कहन को पातक भारी ।
जो जप करै सो देहि उजारी ॥
झूंठे का जप लागत नाहीं ।
सिद्ध होय नहिं निरफल जाहीं ॥
अरु झूठे की नहिं परतीतैं ।
झूंठे की खोटी सब रीतैं ॥

दूजे निन्दा नाहीं करिये ।
पर के औगुन चित्त न धरिये ॥
निन्दा का भारी है पाप ।
या सूं भी निस्फल है जाप ॥
तीजे कडुवा बचन न भाखै ।
सब जीवन सों हित हीं राखै ॥
खोटा बचन महा दुखदाई,
जो साधै सो अति बलदाई ॥
खोटा बचन तपस्या खोवै,
नरक माहिं लै जाय समोवै ॥
मीठे बचन बोलि सुख दीजै,
उन के मन का सोक हरीजै ॥
कहै सुकदेवा चौथा सुनिये,
चरनदास लै मन में गुनिये ॥१८॥

॥ दोहा ॥

चौथे मौन गहे रहै, लच्छन अधिक अमोल ।
कर्म लगै जग बात सों, हरि चरचा में खोल ॥१९॥

॥ तन के कर्मों का निर्णय ॥

तन सों तीनि कर्म जो लागैं,
सो मैं कहूं तुम्हारे आगे ॥
चोरी जारी अरु हिंसा है,
इन पापन सों भारी भय है, ॥
कर्म छुटै जा की विधि गाऊं,
भिन्न भिन्न तो कूं समझाऊं ॥
तन सों चोरी कबहुं न कीजै,
काहू की नहिं बस्तु हरीजै ॥
चोरी त्यागै सो सतबादी,
ता पर रीझैं राम अनादी ॥
जारी के कर्म ऐसे मानो।
पर तिरिया कूं माता जानो ॥
तीजे हिंसा त्यागहिं कीजै।
दया राखि जीवन सुख दीजै ॥
दया बराबर तप नाहिं कोई।
आतम पूजा ता सों होई ॥

कर्म छुटन की भारी गैला ।
ज्यों साबुन उजला पट* मैला ॥
सुकदेवा कहैं तन के कहे ।
तीन कर्म अब मन के रहे ॥

॥ मन के कर्मों का निर्णय ॥

॥ दोहा ॥

कहौं जो मन के तीन अब, झीनी जिन की बात ।
गुरू दिखाये दीखई, बिधि औरी न दिखात ।२०।
खोंटी चितवन बैर हीं, अरु तीजा अभिमान ।
इन सें कर्म लगैं घने, मेटैं संत सुजान ॥२१॥

॥ चौपाई ॥

खोटी चितवन खोलि दिखाऊं ।
जा सों कहिये सो समुझाऊं ॥
कबहूं चितवै पर नारी कूं ।
कबहूं चितवै फल बारी कूं ॥
मन हीं मन सें भोगै भोग ।
हाथ न आवै उपजै सोग ॥
कबहूं चितवै वा कूं मारौं ।
कबहूं चितवै फांसो डारौं ॥

---

* वस्त्र ।

कबहूं चितवै द्रब्य चुराऊं ।
वा को धन अपने घर लाऊं ॥
भांति भांति चितवन उपजावै ।
बुरे मनोरथ कर्म लगावै ॥
ता तें या का करै उपाऊ ।
होय जो साधू कर्म छुटाऊ ॥
जो चितवै तौ हरि गुरु चरना ।
ब्रह्म बिचार सदा ही करना ॥
खोंटी चितवन चितवै नाहीं ।
सदा रहै थिरता के माहीं ॥
कहि सुकदेव सो हिरदै रहै ।
इत उत कूं चित नाहीं बहै ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

दूजा कर्म जो बैर है, महा पाप की पोट ।
सदा हिया जलता रहै, करै खोंट ही खोंट ॥ २३ ॥

॥ चौपाई ॥

बैर भाव में औगुन भारी ।
तन छूटै जा नरक मँझारी ॥
वैरी याद रहै मन माहीं ।
हरि सों हेत लगन दे नाहीं ॥
ता तें बैर भाव नहिं कीजै ।
या कूं कर्म लाग नहिं दीजै ॥

अरु तीजा जानो अभिमाना ।
गुरु किरपा सों ता कूं जाना ॥
हूं हूं हूं हूं करता रहै ।
नीची होय तौ अंतर दहै ॥
कबहूं फूलै मन के माहीं ।
मो समान कोउ ऊंचा नाहीं ।
मैं हौं यों कर यों कर करिया ।
मो बिन कारज कछू न सरिया ॥
अपने को चतुरा बहु जानै ।
और सबन कूं मूरख मानै ॥
अभिमानी ऐसा मन लावै ।
हरि के गुन किरिया बिसरावै ॥
गर्ब भरा खोटो बृत धारै ।
अपने मन में कबहुं न हारै ॥
सुकदेव कहैं याही पहिचानो ।
नरक जायगा निस्चै आनो ॥
रनजीता सुन अभिमान न कीजै ।
कर्म बचाय परम सुख लीजै ॥ २४ ॥

---o---

॥ सुभ असुभ कर्म फल के दृष्टांत ॥

॥ दोहा ॥

कृत्यघनो* बेमुख भवै, गुरु सों बिद्या पाय ।
उन कूं जानै तनक हीं, आपन कूं अधिकाय ॥२५॥

---

* नाशुकरा ।

॥ चौपाई ॥

जैसे इक दृष्टांत सुनाऊं ।
कथा पुरानी कहि समुझाऊं ॥
महा पुरुष इक स्वामी पूरा ।
ज्ञान ध्यान में था भरपूरा ॥
लच्छन सभी हुते वा माहीं ।
आठ पहर हरि हीं की ध्याहीं ॥
उन को सिष्य आन इक भयो ।
वहि उपदेस जो नीको दयो ॥
करि कै प्यार निकट जो राखै ।
प्रीति करी अरु सब कुछ भाखै ॥
फिर रामत की अज्ञा लीन्ही ।
उन हूं करि किरपा तब दीन्ही ॥
पहुंचा एक नगर अस्थाना ।
ह्वां के नरन सिद्ध बड़ जाना ॥
ठहराया अरु पूजा कीन्ही ।
बहुत नरन ने कंठी लीन्ही ॥
बहुतक प्रानी आवैं जावैं ।
संध्या भोर सीस बहु नावैं ॥
महिमा देखि फूल मन माहीं ।
कहा कि हम सम गुरु भी नाहीं ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

गद्दी पर बैठा रहै, तकिया बड़ी लगाय ।
बहुत रहैं अज्ञा बिषे, सिर पर चँवर ढुराय ॥ २७ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु परताप नहीं वह जानै ।
अपनो ही वुधि बड़ो जु ठानै ॥
मूरख आगे क्यों नहिं भया ।
दीन होय करि द्वारे गया ॥
थोड़े ही से बहु इतराना ।
गुरु की कृपा प्यार ना जाना ॥
वार वार सोचै मन सोई ।
हमरो गुरु क्या ऐसा होई ॥
उन कूं तो नर कोइ कोइ जानै ।
हम कूं सिगरो देस बखानै ॥
दिन दिन बढ़ता दीखै आगे ।
मेरे भाग वड़े हीं जागे ॥
मेरे मन में ऐसी आवै ।
उन का सिष्य जु कौन कहावै ॥
वहीं अचानक गुरु ह्वां आया ।
वैठे हीं सिर सिष्य नवाया ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

जैसे आते बैसनौ, करता वह डंडौत ।
ऐसे ही गुरु से किया, आदर किया न भौत* ॥ २९ ॥

* बहुत ।

॥ चौपाई ॥

देखि गुरू मन हांसी ठानी ।
वाकूं जाना वहु अभिमानी ॥
मुख सूं कह कर बहु झिड़कारा ।
कहा कि तू अभिमानी भारा ॥
नीकी वुधि तेरी गइ खोई ।
वसी मूर्खता घट में सोई ॥
मेरा सब उपदेस बिसारा ।
जग मोहन कूं मन में धारा ॥
दस बीसन कूं सिष करि भूला ।
गद्दी पर बैठो बहु फूला ॥
सिष ने कहा और क्या कीया ।
वही किया अज्ञा तुम दीया ॥
तुम ने हीं सतसंग बताई ।
कीजो दीजो जिन मन लाई ॥
सिष्य सखा करि संग बढ़ाई ।
मेरी तुम्हरी भई बड़ाई ॥
देखि ईर्षा तुम कूं आई ।
हमरी देखी बहु अधिकाई ॥
फिरि हँसि गुरु कहि तू अज्ञानी ।
मैं कहि संगति तैं नहिं जानी ॥

मैं कहि भक्तन का संग कीजै ।
सत पुरुषन के चरन गहीजै ॥
दिन दिन ज्ञान होय सरसाई ।
हरि गुरु से ह्वै प्रीति सवाई ॥
तेरी तौ गति औरै भई ।
महा अविद्या में मति ठई ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

झरना मूंदे ज्ञान के, छाय रहा अज्ञान ।
राम रुठावन हीं किया, भई मुक्ति को हान ॥ ३१ ॥
कहा बात पूंजी कहा, इतने में गयो भूलि ।
मति ओछी घट थोथरा, ता पर बैठो फूलि ॥३२॥
बिभव प्राप्त ते सिद्ध जो, देह बिसरजन होय ।
वह बीनो गुरु को तजै, जाय नरक को सोय ॥३३॥
कछू तपस्या ना करी, नाहिं किया कछु जोग ।
नालरु लगो समाधि हीं, ले बैठो तू भोग ॥ ३४ ॥
रज गुन तम गुन ले लिया, तजा सतो गुन अंग।
हरि गुरु को दइ पीठ हीं, करि बिषयन कूं संग ।३५॥
भक्ति भाव कूं छोड़ि कै, करी दंभ की हाट ।
मुक्ति पंथ कूं तजि दिया, लई नरक की बाट॥३६॥
इन बातन सों क्या सरै, बहुत भया बिख्यात ।
तुम से अधिकी मूढ़ नर, जग के घने दिखात॥३७॥

हुकुम बड़ा माया बड़ी, नामी बड़े जु भूप ।
नर नारी बहु टहल में, सुंदर अधिक अनूप ॥३८॥
संतन की गति और है, हरि गुरु से सन्मुक्ख ।
मुक्त होय छूटैं सबै, जन्म मरन के दुक्ख ॥ ३९ ॥
जगत बड़ाई में फँसे, परी अबिद्या छाहिं ।
नरक भुगति जम दंड हीं, फिरि चौरासी माहिं॥४०॥

॥ चौपाई ॥

हरि औ गुरु को सिर पर धरिये ।
सतपुरुषन की संगति करिये ॥
रहिये साधुन के संग माहीं ।
ध्यान भजन जहँ छूटै नाहीं ॥
ह्वै परिपक्क जहां मन रहो ।
गुरु मत दया दीनता गहो ॥
सहज सहज उपदेस लगावो ।
भूले कूं हरि बाट बतावो ॥
तारन तरन बहुत जन भये ।
छिमा दीनता धारे गये ॥
पै उन कूं अभिमान न आया ।
नेक न पड़ी अबिद्या छाया ॥

आपा मेटि गुरू हीं राखा ।
जब बोले तब गुरु हीं भाखा ॥
तू अभिमानी जन्म गँवाया,
पाप बोझ सिर घना उठाया ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

वोहीं नभ की ओर से, बानी भई जु आय ।
कियो गुरू से मान तैं, चौरासी कूं जाय ॥ ४२ ॥
ह्वां सूं गुरु रमते भये, सिष्यहिं दे फटकार ।
कहा कि तेरे तन बिषे, हूजो बड़ो बिकार ॥४३॥
ता पीछे कछु दिनन में, देही भयो बिकार ।
निकट न आवे तासु के, ह्वां के कोउ नर नार ॥४४॥
कुष्ट भयो अधंग को, रहो न काहू जोग ।
आठ पहर वा कूं भयो, निरा सोग ही सोग ॥४५॥
तन तजि कै नरकै गयो, फिरि चौरासी माहिं ।
जो गुरु से मानै करै, ता की गति हू नाहिं ॥४६॥
कहैं गुरू सुकदेव जी, चरनदास परबीन ।
मन सों तजि अभिमान कूं, गुरु सों रहिये दीन ॥४७॥
मान न काहू सूं करै, सब हीं सूं आधीन ।
समरथ हरि की भक्ति में, जगत काज सों हीन ॥४८॥
दस कर्मों कूं जानिये, महा पाप की खान ।
तन मन वचन संभारिये, यही जु अधिक सयान ॥४९॥

॥ दृष्टांत ॥

॥ दोहा ॥

कहूं एक दृष्टांत हीं, सो परमारथ भेस ।
सुनि समुझै हिरदै धरै, तौ लागै उपदेस ॥५०॥
रहै सोहावन नगर इक, बसैं लोग सुखमान ।
नर नारी सुन्दर सबै, अरु धनवंत बखान ॥५१॥
नया करैं जहं भूप हीं, बरष दिना के माहिं ।
संबत बीते तासु के, फिर वे राखैं नाहिं ॥५२॥

॥ चौपाई ॥

डारि देयं नद्दी के पारा ।
जहां भयानक अधिक उजारा* ॥
पसू आदि ताकूं भखि जावैं ।
सुपना सा देखै बिनसावै ॥
नया भूप करि अज्ञा मानैं ।
ताकूं अपना ईसुर जानैं ॥
रहैं हुकुम माहीं कर जोरैं ।
वा कूं बचन न कबहूं मोरैं ॥
छत्तर धारी हुाईं डारैं ।
सो मैं आगे कही उजारैं* ॥
कई सैकड़ों ऐसे भये ।
चेते नाहीं निरफल गये ॥

---

* उजाड़ ।

राजा नया और इक किया ।
सो वह समझा चेला हिया ॥
मन हीं मन में कहै बिचारे ।
बहुत भूप जंगल में डारे ॥५३॥

॥ दोहा ॥

बरस दिना जब बीति है हमहुं क देहैं डारि ।
सरिता हीं के पार हीं अधिको जहां उजारि* ॥५४॥

॥ चैापाई ॥

या कूं कछू उपाय बिचारौं ।
ता सेती यह जन्म न हारौं ॥
एक दिना उन यह्रो बिचारा ।
देखन गयो नदी के पारा ॥
जहां भूप जा जा करि मरते ।
तिन के हाड़ हूईं जा गिरते ॥
खड़ा जु होय देखि मन आई ।
नीको ठौर बनाऊं ह्यांईं ॥
दृष्टि उठाय ऊंचि जो कीन्ही
कामदार कूं अज्ञा दीन्ही ॥
बन काटो अज्ञा दइ एता ।
फेरक पांच कोस में जेता ॥

* उजाड़ ।

सुंदर सा इक कोट बनावो।
ता में सुन्दर बाग रचावो॥
करो हवेली ता के माहीं।
जैसी भूपन हूं कै नाहीं॥
गिलम* बिछौने परदे लावो।
औ तैयारी सबै करावो॥
होय चुकै जब मोहिं सुनावो।
बहुत इनाम अधिक तुम पावो॥५५॥

॥ दोहा ॥

वैसे हीं बनने लगी, जैसी अज्ञा दीन।
बनते बनते बन चुकी, सुन्दर अधिक नवीन॥५६॥

॥ चौपाई ॥

फिरि राजा कूं आनि सुनाया।
राजा सुनि बहुतै सुख पाया॥
आछी बस्तु वहां पहुंचाई।
ह्यां जो रही न सुरति लगाई॥
कहा कि एक दिना ह्वां जाना।
छिन छिन होय अवधि की हाना॥
पांचक गांव कोट के साथा।
किये दिये लिखि अपने हाथा॥
अपना एक हितू मन भाई।
भरी कचहरी लिया बुलाई॥

* गलीचा।

करि इनाम ता कूं वह दिया ।
वा कूं देखा सांचा हिया ॥
और कही जो राजा होवै ।
वाहि तिलाक याहि जो खोवै ॥
योहीं आठ महीने बीते ।
करनी करि भये मन के चीते ॥५७॥

॥ दोहा ॥

ह्वै निचिंत आनंद भये, चिंता भय नहिं कोय ।
अपना कारज करि चुके, ह्यां ह्वां एकहिं होय ॥५८॥

॥ चौपाई ॥

सुख ही में वह बर्ष बिताया ।
अवधि बीति फिरि वह दिन आया ॥
सब उमराव* जो घिरि कर आये ।
नया भूप करने कूं लाये ॥
याहि सिंहासन सूं दियो डारी ।
कहा कि तुम्हरी बीती बारी ॥
ऐसे कहि कर गहि लै चाले ।
पार नदी के जंगल घाले ॥
सुभ करनी कूं करि वह राजा ।
अपने महलन जाय बिराजा ॥

* अमीर ।

इत सें भी उत सुख बहु भारी ।
ना कोइ वैरी ना जंजारी ॥
अपनी करनी से सुख पावै ।
रहै असोक न चिंता आवै ॥
कहि सुकदेव चरन हीं दासा ।
सुभ करनी करि पाया वासा ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे मानुस देह कूं, जानहु नगर समान ।
राजा या में जीव है, सुभ करनी परमान ॥ ६० ॥

॥ चौपाई ॥

नाहिं तो चौरासी जंगल है ।
भांति भांति का जितहीं भय है ॥
पसू पसू कूं जित भखि जावै ।
नित भय मानि नहीं सुख पावै ॥
वहु दुख पावै खोंटी करनी ।
जैसी करनी तैसी भरनी ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

भूप उमरि अपनी किया, अपना पूरन काम ।
ऐसे ही सुभ कर्म सूं, तुम हूं पावो धाम ॥ ६२ ॥

॥ दृष्टांत ३ ॥

॥ चौपाई ॥

कथा कहौं इक और पुरानी ।
करनी करै सु समझै प्रानी ॥
इंदु नाम इक ब्राह्मन हुता ।
जा के दस सुत और इक सुता ॥
सुता ब्याह दई घर की हुई ।
जा के पीछे माता मुई ॥
पिता मुवा दस पुत्र रहे थे ।
आपस में सब बैठि कहे थे ॥
ऐसी कछु जो करनी कीजै ।
जग में ऊंची पदवी लीजै ॥
इक ने कही हूजिये भूपा ।
सुन्दर देही धरो अनूपा ॥
तेज मुल्क में होवे भारी ।
हुकुम जु माने नर अरु नारी ॥
और एक ऐसे उठि बोला ।
सावधान ह्वै अंतर खोला ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

राजा हों को हुकुम तो, थोरे ही में जोय ।
ऐसी करनी कीजिये, भूप चक्रवै* होय ॥ ६४ ॥

---

*चक्रवर्ती, चारो दिसा का ।

एक दीप नौ खंड में, जा कूं पूरा राज ।
एक और उठि बोलिया, यह भी ओछा साज ॥ ६५ ॥
चक्रवर्ति में इंद्र बड़ देवन हूं कूं भूप ।
उमर बड़ी आनंद बड़े, दुख की लगै न धूप ॥ ६६ ॥

॥ चौपाई ॥

करनी करत इन्द्र हीं लोका ।
हो कर राजा कीजै भोगा ॥
जहां अप्सरा निर्त करत हैं ।
सुंदर अधिकी रूप धरत हैं ॥
और बड़ा भाई यों भाखा ।
सुर पति हूं कूं नाहीं राखा ॥
कहा कि पदवी ब्रह्मा की सी ।
और न दीखै काहू ही सी ॥
जा के एक दिवस हीं माहीं ।
चौदह इन्द्र सर्ब ह्वै जाहीं ॥
सब ब्रह्मांड आसरे वा के ।
बिनसि जायं मिटि जाये जा के ॥
तीनि लोक का पिता वही है ।
बेद पुरानन माहिं कही है ॥
करनी करि करि ब्रह्मा हूजे ।
ऐसी पदवी क्यों नहिं लीजे ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

सगरे यों उठि बोलिया, सत्य सत्य यह बात ।
ऐसा ही अब कीजिये, ठहराई सब भ्रात ॥ ६८ ॥

॥ चौपाई ॥

दसहू करन तपस्या लागे ।
पार ब्रह्म की ओरी पागे ॥
अधिक तपस्या कीन्हो भारी ।
मास सूखिगा दीखै नारी* ॥
हाड़ तुचा चिपटी रहि गई ।
लोहू धातु कछू ना ठई ॥
सब जन चित्रहिं से रहि गये ।
क्लिष्ट† तपस्या ऐसे ठये ॥
फूल पात जलहूं नहिं लीन्हा ।
ऐसा तप दस हूं ने कीन्हा ॥
तन त्यागे दूजे ही जन्मा ।
दसहूं भ्रात हुए जो ब्रह्मा ॥
जिन के दस ब्रह्मांड बने हैं ।
एक एक तिन माहिं ठने हैं ॥
करनी कबहुं न निस्फल जावै ।
जो मन वारै सोई पावै ॥ ६९ ॥

*नाड़ी, हड्डी । † क्लेशवाली ।

॥ दोहा ॥

करनी सूं भये इन्द्र हूं, करनी ब्रह्मा सोय ।
करनी सूं ईसुर भये, सुकदेवा कहै सोय ॥ ७० ॥
दस हजार इक बीस हीं, बरस तपस्या कीन्ह ।
हरि जा कूं बदलो दियो, मांगो सो बर दीन्ह॥७१॥
चारौ जुगके माहिं जो, करनी हीं परधान ।
गुरु सुकदेवा कहत है, चरनदास उर आन ॥ ७२ ॥
उज्जल करमन के किये, दिन दिन उज्जल होय ।
मन में उपजै भक्ति हीं, प्रेम पदारथ सोय ॥७३॥

॥ चौपाई ॥

चरन दास तुम करनी कीजै ।
या हीं में मन नीके दीजै ॥
ऐसा जनम बहुरि नहिं पैहो ।
बीति जाय पुनि बहु पछितैहो ॥
मानुष देह या दुर्लभ जानौ ।
वा कूं पा सुभ करनी ठानौ ॥
या देही में करी कमाई ।
जाय स्वर्ग में नव निधि पाई ॥
मूरख करनी को नहिं जानै ।
कथनी कथि कथि बहुत बखानै ॥
थोथी कथनी काम न आवै ।
थोथा फटकै उड़ि उड़ि जावै ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

कथनी हीं के बीच में, लीजै तत्व बिचार।
सार सार गहि लीजियो, दीजो डारि असार ॥७५॥

॥ चौपाई ॥

थोथी कथनी वही जु जानौ।
बिन करनी जो करै बखानौ ॥
लोक परलोक न सोभा पावै।
बकि बकि बकि खाली मरि जावै ॥
कथनी के सूरा बहु जाने।
करनी में कायर अरु याने* ॥
सूरा वही जो करनी करै।
दया धरम लै सन्मुख अरै† ॥
पांव धरै सो नाहिं उठावै।
करनी करता चला जु जावै ॥
फिरै जबहिं फल लै कर आवै।
सो वह सूरा मल्ल कहावै ॥
कायर बीचहिं सूं फिरि आवै।
सो वह करनी कूं बिसरावै ॥
आपन खोंट न जानै भोंदू।
वह तौ कथनी ही का गोंदू ॥ ७६ ॥

*बच्चे। †अड़े।

ऐसे जग में बहुत हैं, वैसे जग में नाहिं ।
कोई कोई देखिये, सतगुरु के मध माहिं ॥७७॥

॥ चौपाई ॥

होनहार को बहुत बतावैं ।
पै ता को कछु मरम न पावैं ॥
कहैं कि होनी होय सो होई ।
ता कूं मेटि सकै नहिं कोई ॥
या कूं समुझि उपाय न करिया ।
सरधा तजि कायर ह्वै परिया ॥
समुझि निखट्टू गृही भये हैं ।
भेख धारि बिन करनि रहे हैं ॥
जानत नाहिं जो पिछली करनी ।
अब के भई जो होनी भरनी ॥
परालब्ध अरु भाग कहावै ।
पिछले करमन से उपजावै ॥
अब के करै सो आगे आवै ।
कछू कछू फल अभी दिखावै ॥
कै काहू गाली दै देखो ।
कै काहू को मारि बिसेखो ॥

कै काहू को असन* खवावो ।
कै काहू को सीस नवावो ॥
कै करि चोरी द्यूत† हिं खेलौ ।
कै काहू को गुस्सा झेलौ ॥
दोनों का फल आगे आवै ।
चरनदास सुकदेव बतावै ॥
प्रगट देखिये यही तमासा ।
नीच ऊंच करनी परकासा ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

कोटि यही उपदेस है, यही जु सगरी बात ।
करनी हीं बलवंत है, यों सुकदेव दिखात ॥७९॥
मन की करनी ज्ञान ह्वै, परमातम लखि लेय ।
ब्रह्म रूप ह्वै जाय जब, छूटै सब हीं भेय ॥८०॥
भवसागर में भय घने, ता की लगै न आंच ।
झूठे को भय बहुत है, भय नहिं व्यापै सांच ।८१।
करनी हीं सूं पाइये, पारब्रह्म का खोज ।
सतगुरु पै चल जाइये, मेटै सब हीं सोज ॥८२॥
विना किये कछु होय ना, आपहि लेहु विचार ।
करनी देखो दूर लौं, सोचा बारम्बार ॥८३ ॥
चरनदास तो सूं कहूं, उठि उद्यम कूं लाग ।
आलस सकल गँवाय कै, बिषयन में मत पाग ॥८४॥

---

* भोजन † । जुवा ।

कारज लोक प्रलोक के, बिन करनी हों नाहिं।
करनी हीं सूं होत है, करनी सब के माहिं ॥८५॥
खोटे करमन सूं दुखी, या दुनिया के बीच।
करनी हीं सूं होत है, नर ऊंचा औ नीच ॥८६॥
संगति मिलि करने लगे, ऊंचे नीचे कर्म।
बुधि मैली जो होत है, खोवै अपना धर्म ॥८७॥
सत संगति सूं रहत है, धर्म कुसंगति जाय।
चरनदास सुकदेव कहि दोनों दिये दिखाय ॥८८॥
धर्म गया जब सत गया, भ्रष्ट भई अति बुद्धि।
तबहिं पाप अरु पुन्न की, कछू रही ना सुद्धि ॥८९॥
बिरले जन को होत है, पाप पुन्न की सूझ।
सोइ छूटै जग जाल सूं, बहुतै रहे अरूझ ॥९०॥
तन मन साधै बचन हीं, पाप न लगने देह।
सुकदेव कहैं चरनदास सुनि, अधिकी साधन येह ॥९१॥
सब जीवन सुख दीजिये, सब सों मीठा बोल।
आतम पूजा कीजिये, पूजा यही अतोल ॥९२॥
दया पुष्प चंदन नवन*, धूप दीप दे मन्न।
भांति भांति नैबेद सूं, करै देव परसन्न ॥९३॥
जो कोइ आवे राजसी, देहु बड़ाई ताहि।
जा कूं देखो तामसी, करो नम्रता वाहि ॥९४॥

* दीनता।

जो कोइ होवे सातुकी, मिलो ताहि तजि मान ।
गुढ़ी[*] खोलि चरचा करो, लीजै तत मत छान ॥९५॥
सब हीं कूं परसन करै, आप रहै परसन्न ।
वास लहै हरि ध्यान हीं, ह्यां कहै सब धन धन्न ।९६॥
राजस तामस सातुकी, छेतर तीनहिं भांति ।
छेत्रक आतमदेव है, सब कोसहिं ये क्रांति[†]।९७।
सब में देखै आप कूं, सब कूं अपने माहिं ।
पावै जीवन मुक्ति कूं, या में संसय नाहिं ॥९८॥
सब में देखै आतमा, आपन में करि ध्यान ।
यही ज्ञान ब्रह्म ज्ञान है, यही जु है बिज्ञान ॥९९॥
अहंकार मिटि ब्रह्म हो, परमातम निर्बान ।
सुकदेवा हो कहत हूं, चरनदास हिय आन।१००॥
जो तैं पूछा सो कहा, भेद कहा सब खोल ।
अरु तेरे हिय में कछू, सकुच खोल कर बोल।१०१।

॥ शिष्य बचन ॥

॥ दोहा ॥

धन्न सिरी[‡] सुकदेव जी, बचन तुम्हारे धन्न ।
सब संदेह मिटाय करि, निस्चल कीन्ह्यो मन्न।१०२।
मो से रंक गरीब की, तुम हीं पकरी बाँहँ ।
भव बूड़त राख्या मुझे, चरन कँवल की छाहँ ।।१०३॥

---

[*] गूढ़ बातें । [†] आतमदेव का प्रकाश तीनों कोषों में है । [‡] श्री ।

आपहिं तुम किरपा करी, मैं कित लहता तोहिं।
तुम कूं पाऊं ढूंढ़ करि, इतनी शक्ति न मोहिं।१०४।
ब्यास पुत्र सुकदेव तुम, जक्त माहिं बिख्यात।
तुम दरसन दुर्लभ महा, पुरुषन कूं न दिखात॥१०५।
बड़े भाग मेरे जगे, पूरबले परताप।
किरपा श्री गोपाल की, आय मिले तुम आप।१०६॥
चरनदास अपनो कियो, दियो परम संतोष।
बैठि करूंगो ध्यानहीं, अब कुछ रह्यो न सोक१०७॥
चलत फिरत ह्यां आइया, तुम भरि दीन्ह्यो मोहिं।
नैन प्रान तन मन सभी, देखत अरपे तोहिं॥१०८॥
चाह मिटी सब सुख भये, रहा न दुख का मूल।
चाहूं तौ चाहूं यही, तुम चरनन की धूल॥१०९॥

॥ गुरु बचन ॥

॥ दोहा ॥

जोग तपस्या कीजियो, सकल कामना त्याग।
ता कूं फल मत चाहियो, तजो दोष अरु राग।११०॥
अष्ट सिद्धि जो पै मिलैं, नेक न कीजै नेह।
धरि हिरदै परमातमा, त्यागे रहियो देह॥१११॥
जेती जग की बस्तु है, ता में चित्त न लाय।
सावधान रहियो सदा, दियो तोहिं समुझाय।११२।

बार बार तो सूं कहूं, ह्यां मत दीजो चित्त ।
सिद्धि स्वर्ग फल कामना, तजि कीजो हरि मित्त ।११३।
जो कीजै हरि हेत हीं, ए हो चरनहिं दास ।
भक्तिजोग अरु सुभ करम, नीको ठौर निवास ॥११४॥

॥ शिष्य बचन ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे ही सब कहूंगो, तुम चरनन परताप ।
अष्ट सिद्धि समुझो चहूं, बरनन कीजै आप ॥११५॥
समझूं तौ त्यागूं उन्हैं, करवावो पहिचान ।
कहा नाम लच्छन कहा, कौन रहै अस्थान ॥११६॥

॥ गुरु बचन ॥

॥ दोहा ॥

कहि सुकदेव बरनन करूं, अष्ट सिद्धि के नावँ ।
लच्छन गुन सब हीं सहित, नीके तोहिं समुझावँ ।११७।

॥ अष्ट सिद्धि के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथमै अनिमा सिद्धि कहावै ।
चाहै तौ छोटा ह्वै जावै ॥
अनु* समान छिपि जावै सोई ।
ऐसी कला जो पावै कोई ॥

* बहुत छोटा ।

दूजी महिमा लच्छन एता ।
चाहै बड़ा होय वह जेता ॥
तीजी लघिमा वह कहवावै ।
पुष्प तुल्य हलका ह्वै जावै ॥
चौथी गरिमा कहूं बिचारी ।
चाहै जितना होवै भारी ॥
पचवीं प्रापति सिद्धि कहावै ।
जित चाहै तित हीं ह्वै आवै ॥
छठवीं पराकाम्य गुन धरै ।
सक्ति पाय चाहै सो करै ॥
सतवीं सिद्धि ईसता रानी ।
सब कूं अज्ञा माहिं चलानी ॥११८॥

॥ दोहा ॥

बसीकरन सिधि आठवीं, कहैं सिरी* सुकदेव ।
चाहै जिसको बसिकरै, अपना हीं करि लेव॥११९॥
चरनदास सिद्धैं कहीं, समुझि लेहि मन माहिं ।
जो हैं जनुवां राम के, इन में उरझैं नाहिं॥१२०॥

॥ चौपाई ॥

जोग किये आठौ सिधि पावै ।
कै भोगै कै चित न लगावै ॥

* श्री ।

जोग किये मन जीता जावै ।
पलटै जीव ब्रह्म गति पावै ॥
जोगेसुर चाहै सो करै ।
भरी रितावै* रीती भरै ॥
जोगेसुर ईसुर ह्वै जाई ।
दिन दिन बाढ़ै कला सवाई ॥
तजिये भोग जोग हीं करिये ।
तिरगुन परे ध्यान हीं धरिये ॥
चौथे पद में करै निवासा ।
काहू बिधि का रहै ना सांसा† ॥
जोग करै सोई परबीना ।
सुकदेव कहैं परगट कहि दीना ॥१२१॥

॥ दोहा ॥

पोथो माहीं देखि कर, करै जो कोई जोग ।
तन छीजै सिधि ना भवै, देही आवै रोग ॥१२२॥
देखि देखि गुरु सूं करै, ले अज्ञा रहि संग ।
सिद्धि होयं साधन सवै, कछू न आवै भंग ॥१२३॥
जोग तपस्या में वड़ा, पहुंचावैहरि पास ।
जनम मरन बिपता मिटै, रहै न कोई आस ॥१२४॥
ज्ञान सुरति दोउ एक ह्वै, पलटि अगोचर जाय ।
शब्द अनाहद में रतै, मन इन्द्री थिर पाय ॥१२५॥

* ख़ाली करै । † संसय ।

॥ शिष्य बचन ॥

॥ दोहा ॥

मैं समझी जानी सभी, सूझि भई हिय माहिं ।
किरपा करि जो जो कहा, ता कूं बिसरूं नाहिं ॥१२७॥

॥ चौपाई ॥

ब्यास पुत्र तुम मम गुरु देवा ।
करूं मानसी तुम्हरी सेवा ॥
मन में तुम्हरी सेवा साजूं ।
तुम सूं पूछि करूं सब काजूं ॥
मेरे ध्यान सितावी आये ।
जो थे सो संदेह मिटाये ॥
मैं तो ध्यान करत ही रहूं ।
तुम्हरी मूरति हिरदे गहूं ॥
मेरे जीवन प्रान अधारा ।
मैं नहिं रहूं चरन सूं न्यारा ॥
तुम्हरो चरनन दास कहाऊं ।
बार बार तुम पै बलि जाऊं ॥
तुम हीं को ईसुर करि मानूं ।
पार ब्रह्म तुम हीं कूं जानूं ॥
और न कोई दूजी आसा ।
मो हिरदय में राखौ बासा ॥ १२८ ॥

॥ दोहा ॥

अपने चरनहिं दास को, सब बिधि दिया अघाय ।
अस्तुति करूं तो क्या करूं, मो पै कही न जाय ॥१२९॥

—:o:—

॥ गुरुमुख लच्छन ॥

॥ चौपाई ॥

अब गुरुमुख के लच्छन गाऊं ।
जुदे जुदे करि सब समझाऊं ॥
इन कूं समुझि धरै हिय कोई ।
पूरा गुरुमुख कहिये सोई ॥
प्रथमहिं गुरु सूं झूठ न बोलै ।
खोटी खरी करै सब खोलै ॥
दूजे गुरु कूं पै न लगावै ।
निस्चय गुरु के चरन मनावै ॥
तीजे अज्ञाकारी जानो ।
इन लच्छन गुरुमुखी पिछानो ॥
जो कोइ गुरु का लेवै नाम ।
ताकूं निहुरि करै परनाम ॥
जो कहुं देखै गुरु का बाना ।
ता कूं जानै गुरू समाना ॥
चरनदास सुकदेव बखानै ।
गुरु भाई कूं गुरु सम जानै ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गुरु भाई कूं पूजिये, धरिये चरनन सीस ।
चरनोदक फिरि लीजिये, गुरु मत बिस्वा बीस ॥२॥

॥ चौपाई ॥

जो कहुं गुरु का बसतर पावै ।
हिये लगाय चूमि दृग छ्वावै* ॥
गुरू देस का मानुष आवै ।
दै परिकरमा सीस नवावै ॥
कहां दया करि दरसन दीने ।
मेरे पाप भये सब छीने ॥
जो अपने गुरु द्वारे जैये ।
देखत पौरि† बहुत हरखैये† ॥
ह्वांइं सूं दंडौत जु कीजै ।
दरसन करि करि सर्बस दीजै ॥
फिर ठाढ़ा रहै जोरे हाथा ।
बैठै जब अज्ञा दें नाथा ॥
जो बोलैं सो मन में धरिये ।
अपने अवगुन सब हीं हरिये ॥
चरनदास सुकदेव बतावै ।
ऐसा गुरुमुख राम रिझावै ॥ ३ ॥

* छुवावै । † देवढ़ी ।

चुने हुए दोहे जिन में मन को मोड़ कर गुरू और मालिक की भक्ति में लगाने का उपदेश है ॥

गुरू कहैं सो कीजिये, करैं सो कीजै नाहिं।
चरनदास की सीख सुन, यही राख मन माहिं॥१॥
कथा सुने ब्रत हूं किये, तीरथ किये अघाय।
गुरुमुख के हूए बिना, जप तप निस्फल जाय॥२॥
दुखी न काहू कूं करै, दुख सुख निकट न जाय
सम दृष्टी धीरज सदा, गुन सात्विक कूं पाय ॥३॥
भंवर गुफा मंडल अखंड, तिरबेनी जहँ न्हान।
नित परबी जहँ होत है, करै पाप की हान ॥ ४ ॥
कँवल हंस दल सातवां, सीस मध्य हीं बास।
तहां देवता सतगुरू, पूरी करै जो आस ॥ ५ ॥
जग का कहा न मानिये, सतगुरू से ले बुद्धि।
ता कूं हिय में राखिये, करो सिताबी सुद्धि ॥ ६ ॥
जिन कूं मन बिरक्त* सदा, रहैं जहां चित होय।
घर बाहर दोउ एक सा, डारी दुबिधा खोय ॥७॥
कै घर में कै बाहरे, जो चित आवै नाम।
दोनों होयं बराबरी, कै जंगल कै ग्राम ॥ ८ ॥

*विरक्त।

जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों अम्बुज* सर† माहिं।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं ॥९॥
अब के चूके चूक है, फिर पछितावा होय।
जो तुम जक्त न छोड़ि हो, जन्म जायगो खोय ॥१०॥
छोड़ जगत की बासना, यही जु छुटन उपाव।
हे मन ऐसी धारिये, अब हीं नीको दांव ॥११॥
जग माहीं न्यारे रहो, लगे रहो हरि ध्यान।
प्रथवी पर देही रहै, परमेसुर में प्रान ॥ १२ ॥
ज्यों तिरिया पीहर‡ बसै, सुरति रहै पिय माहिं।
ऐसे जन जग में रहैं, हरि कूं भूलैं नाहिं ॥१३॥
ज्यों किरपिन§ बहु दाम हीं, गाड़ि जिमीं के नीच।
सदा वाहि तकते रहै, सुरति रहै ता बीच ॥१४॥
तन छूटे हो सरप‖ हीं, जा बैठै वा ठौर।
जहां आस तहँ बास है कहूं न भरमै और ॥१५॥
जग त्यागो बैराग लै, निस्चै मन कूं लाव।
आठ पहर साठो घरी, सुमिरन सुरति लगाव ॥१६॥
सब सूं रखु निरबैरता, गहो दीनता ध्यान।
अंत मुक्ति पद पाइ हौ, जग में होय न हानि ॥१७॥

* कंवल। † तालाब। ‡ मायके। § कंजूस। ‖ सांप।

चरनदास यों कहत हैं, बड़ी दीनता जान ।
औरन की तो क्या चलै, लगै न माया बान ॥१८॥
दया नम्रता दीनता, छिमा सील संतोष ।
इन कूं लै सुमिरन करै, निस्चै पावै मोख* ॥१९॥
ये सब लच्छन राम में, परगट दीखैं मोहिं ।
जो वै आवैं तुझ बिषे, प्यार करैं हरि तोहिं ॥२०॥
मिटते सूं मत प्रीत करि, रहते सूं करि नेह ।
झूठे कूं तजि दीजिये, सांचे में करि गेह† ॥२१॥
ब्रह्म सिंध की लहर है, ता में न्हाव सँजोय ।
कलिमल सब छुटि जायंगे, पातक रहै न कोय ॥२२॥
अरसठ तीरथ तोहि बिषे, बाहर क्यों भटकाय ।
चरनदास यों कहत हैं, उलटा हो घट आय ॥२३॥
भरमत भरमत आइया, पाई मानुख देह ।
ऐसा औसर फिर कहां, नाम सितावी लेह ॥२४॥
करै तपस्या नाम बिन, जोग जज्ञ अरु दान ।
चरनदास यों कहत हैं, सब हीं थोथे जान ॥२५॥
अधिको ऊंचा नाम है, सब करनी का जीव ।
अष्टादस‡ अरु चारि§ का, मथि कर काढ़ा घीव ॥२६॥
खाते पीते नाम ले, बैठे चलते सोय ।
सदा पवित्तर नाम है, करै ऊजला तोय ॥२७॥

*मुक्ति । †घर । ‡अट्ठारह पुरान । §चार वेद ।

नीचन कूं ऊंचा करै, ऊंचन कूं करै देव ।
देवन कूं हरि हीं करै, रहै न दूजा भेव ॥२८॥
चारौ जुग में देखि ले, जिन जपिया जिन पाव ।
टेक पकरि आगे धसै, परा न पीछे पांव ॥२९॥
जैसी गति उनकी भई, गावत साध पुरान ।
वैसी तेरी होयगी, यह निस्चै करि जान ॥३०॥
बाजीगर बाजी रची, सब गति पूरन साज ।
किये तमासे बहुत हीं, तोहिं दिखावन काज॥३१॥
देखि देखि देखत रहो, अस्तुति मुख सूं भाखि ।
वा की चतुराई सबै, लैकरि मन में राखि ॥३२॥
वैसा तौ रंगरेज ना, वैसा छीपी नाहिं ।
वैसा कारीगर नहीं, या दुनिया के माहिं ॥३३॥
अजब अजब अचरज किये, अद्भुत अधिक अपार ।
जल थल पवन अकास में, देखो दृष्टि उघार ॥३४॥
सृष्टि बाग माली रची, भांति भांति गुलजार ।
रीझि रीझि सिर दीजिये, ए हो निरखि बहार ॥३५॥
देखि होय परसन्न हीं, तू वा कूं गुन मान ।
चरन दास जो बुद्धि है, अधिक सुघरता जान ॥३६॥
बहुत प्यार तो पै करै, तू नहिं जानत सार ।
वाहि भुलाये हीं फिरै, नेक न करै संभार ॥३७॥
राम बिसारो आदि सूं, लियो द्रव्य अरु नार ।
याही तें भरमत फिरो, तन धरि बारम्बार ॥३८॥

गई सो गइ अब राखि ले, ए हो मूढ़ अयान।
निःकेवल हरि कूं रटो, सीख गुरू की मान ॥३९॥
सोवन में नहिं खोइये, जन्म पदारथ पाय।
चरन दास ह्वै जागिये, आलस सकल गंवाय ॥४०॥
सोवन हीं में हानि है, जागन में बहु लाभ।
बुद्धि उपज हीं होत है, मुख पर चढ़ै जु आभ* ॥४१॥
दिन को हरि सुमिरन करो, रैनि जागि कर ध्यान।
भूख राखि भोजन करो, तजि सोवन की बान ॥४२॥
चारि पहर नहिं जगि सकै, आधि रात सूं जाग।
ध्यान करो जप हीं करो, भजन करन कूं लाग ॥४३॥
जो नहिं सरधा दो पहर, पिछले पहरे चेत।
उठ बैठो रटना रटो, प्रभु सूं लावहु हेत ॥४४॥
जागै ना पिछले पहर, ता के मुखड़े धूल।
सुमिरै ना करतार कूं, सभी गवांवै मूल ॥४५॥
जागै ना पिछले पहर, करै न आतम ध्यान।
ते नर नरकै जायँगे, बहुत सहैं जम सान† ॥४६॥
जागै ना पिछले पहर, करै न गुरुमत जाप।
मुंह फारे सोवत रहै, ताकूं लागै पाप ॥४७॥
पिछले पहरे जाग करि, भजन करै चित लाय।
चरनदास वा जीव की, निस्चै गति ह्वै जाय ॥४८॥

* आब, रौनक़। † दंड।

पिछले पहरै जाग करि, भरि भरि अमृत पीव ।
विषै जक्त की ना रहै, अमर होय कर जीव।४९।
जन्म छुटै मरना छुटै, आवा गवन छुटि जाय।
एक पहर की रात सूं, बैठा हो गुन गाय ॥५०॥
पहिले पहरे सब जगैं, दूजे भोगी मान ।
तीजे पहरे चोर ही, चौथे जोगी जान ॥५१॥
मरजादा की यह कही, क्या बिरक्त परमान ।
आठ पहर साठौं घरी, जागै हरि के ध्यान ।५२।
जो कोइ बिरही नाम के, तिन कूं कैसी नींद ।
सस्तर लागा नेह का, गया हिये को बींध ॥५३॥
तिन से जग सहजै छुटा, कहा रंक कहा भूप ।
चले गये घर छोड़ि कै, धरि बिरक्त का रूप ।५४।
जिन को मन बिरकत सदा, रहो जहां चित होय ।
घर बाहर दोउ एकसा, डारी दुबिधा खोय ।५५।
सोये हैं संसार सूं, जागे हरि की ओर ।
तिन कूं इक रसहीं सदा, नहीं सांझ नहिं भोर ।५६।
उन कूं नींद न आवई, राम मिलन की चीत ।
सोवैं ना सुख सेज पै, तजि के हरि सूं मीत ।५७।
कैसे वे हरि सूं मिले, जिन के ऊंचे भाग ।
कैसे वे हरि त्याग के, रहे जक्त सूं लाग ॥५८॥
सोवन जागन भेद की, को इक जानत बात ।
साधू जन जागत तहां, जहां सबन की रात ।५९।

जो जागै हरि भक्ति में, सोई उतरै पार।
जो जागै संसार में, भवसागर में ख्वार ।६०।
कै जागत हूका* भरा, कै जागा बस काम।
कै जागा जग टहल में, लागि रहा धन धाम॥६१॥
ऐसे जनम गंवाय दे, महा मूढ़ अज्ञान।
चौरासी में फिर चले, मन का कहा जु मान।६२।
सतगुरु सरनै आय करि, कहा न मानै एक।
ते नर बहु दुख पाइ हैं, तिन कूं सुख नहिं नेक।६३।
सतगुरु सरना ना लगे, किया न हरि का खोज।
सो खर कूकर सूकरा, अरु जंगल का रोझ†।६४।
पेट भरे भर सोइया, ते नर पसू समान।
पर नारी कै आपनी, तिन का नाहीं ज्ञान॥६५॥
जैसा तैसा खाय करि, पेट भरे भरि लेह।
पड़ कर सोवे भोर लौं, सो सूकर की देह।६६।
हरि चरचा बिन जो बकै, सो कूकर की भूंस।
कहि रनजित वह सांझ लौं, खाय थूंस ही थूंस॥६७॥
जो पावै सोई चरै, करै नहीं पहिचान।
पीठ लदै हरि ना जपै, ताकूं खर ही जान॥६८॥
रोझ† जान वा देह कूं, ता कूं नहीं विचार।
फिरै बिना मरजाद हीं, बहुता करै अहार॥७९॥
बहुता किये अहार ही, मैली रही जो बुद्धि।
हरि के निर्मल नाम को, कैसे आवै सुद्धि॥ ७०॥

* हुक्का। † नीलगाय।